सं. १८४८ [illegible]

१. कुमार [illegible]

२. [illegible]

६८+३१=९९ पत्राणि

[illegible]

१. [illegible]

२. [illegible]

6120

F - I - 68

II - 31

Total - 99 Complete



ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ अथसुंदरसींगा
रलिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रथमेसुमिरोसार
तीगणजीकोध्यान ॥ प्रणमकरोग
णपतिकोशिवकोधरोध्यान ॥ १ ॥ दो
हा ॥ होतनायकानायकहिआलेबि
नसिंगार ॥ तातैवरनोनायकानायक
मतिअनुसार ॥ २ ॥ दोहा ॥ कवीकरतहैंअ
र्थंनाअथरचोसृंगार ॥ ध्याननधरोहरि
नायकोगावोसुंदरसींगार ॥ ३ ॥ दोहा ॥
उपजिनिताहिविलोकिकैचितवी
वासभाउ ॥ नाहिवखानननायका·
जेप्रवीनकविराउ ॥ ४ ॥ उदाहरनसवै
या ॥ कुंदनकोरंगफीकोलगेझलकै
असीअंगनिचारुगुराई ॥ आखिनिमे
अलसानिचितोनिमेंमंजुविलासन
कीसरसाई ॥ कोविनमोलविकानन

हीमतिरामलहैमसिकाननिमिठाई ॥ औ
जैयांनिहारियैनेरहैनैननिस्यापरीतिक
रेसीनिकाई ॥५॥ दोहा ॥ तरुनिअरुनअंसै
नकौकिरनसमूहउदोत ॥ वैनीमंउन
मुकनकैपुंजपुंजरुचिहोत ॥६॥ छिद्र·
जालमगाहूकटैनियतनदीपतिपुंज
क्रियाकौसौचटमयौदिनहूमैवन
कुंज ॥७॥ कहौनायकातीनिविधिप्रथ
मसुकीयामान ॥ परकीयाअनिहूस्त्री
गनिकातीजीजान ॥८॥ लाजवंतीनि
सदिनपगीनिजपतिकैअनुराग ॥ क
हतस्वकीयाशीलमयताकोपतिव्र
तभाग ॥९॥ उदाहरन ॥ सवैया ॥ सवि
विरंचिनकायमनोहरलाजसमेतने·
वैतवनाई ॥ नापरतोपरभागवडेमति
रामलहैपतिप्रीतभ्रहाई ॥ नेरीसमी

लसभाउमइ कुलनारिनकोकुलका
नीसिषाई॥ तेहोमनोपतिदेवताकेउन
मोरीसभेउणगोतेपढाई॥१०॥दोहा॥
जानतिसौतिअनीतिहैजाननसषी·
सुनीति॥ गुरुजनजानतलाजहीप्री
तमजानतप्रीतु॥११॥त्रिविधसुकीया
जानीयप्रथममुग्धासुग्याताम॥मध्या
प्रौढाजानोवरनतकविमती
राम॥१२॥मुग्धालछन॥दोहा॥
अभिनवजोवनआगमनजाकेत·
नुमैहोइ॥ताकोमुग्धाकहतहैक
विकोविदसभकोइ॥१३॥उदाहरन
कवित॥नेकुमंदमधुरकपोलमु
सक्यानलागेनेकुमंदगमनगाय
दनकेचालमो॥चउथेअंकुरउरोज
नकेअंकुरनवकेडीठनेनजगाने·

सकविसालभो ॥ मतिरामसुकवि
रसीलेकछुवनभयेवदनासिंगार-
रसवलिआलवालभो ॥ वालननजो
वरनरसालउलहतलषीसोतनि
केसालभो ॥ निहालनंदलालभो
अणअरपातजोवनालछन ॥ दोहा
तिनतननजोवनआगमनजोनही
जानेनार ॥ सोअरपातजोवनाकु-
हीवरनतकविनिरधार ॥ १४ ॥ उदा
हरन ॥ सवैया ॥ षेलतचोरमहीच
निआजगईहुतीपाछेलेआसकी
न्याई ॥ बालिकहाकहोपेकमई॰

सं ३

3

मतिरामनहींयहवाततनहारी॥यही
भानडेरेरकदोरहीअगसोअंगाकु
हारिकह्रारी॥ कंपकुसोचनस्व
वसोतनरामउठेअधीयामरआ
ई॥दोहा॥लालतिहारेसंगमेखेले
खेलवलाय॥मदनमेरनेनहीकार
नीकपटलगाय॥दोहा॥निजत
नजोवनआगमनजानीपरतहीं
जाहि॥कातिकोविदसवकहतहै
नयानजोवनाताहीं॥ २५ ॥दोहा॥
सं॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥

बनसोरहसेवरसचीतेअठाअठ
मीतिकातिकसुदिषसटीगुरोरचो
ग्रंथकरिप्रीति॥१॥अथसिंगाररवर
ननं॥दोहा॥प्रथमसिंगारसदासरस
करुणारौद्रसवीरभयबीभत्सव
षौबषेशांतहिंअदभुतधीर॥२॥सब
रसमेंसिंगाररससबतेनीकोआहि
तामेंनीकीनाइकाबरननहैकविता
न॥सोपुनीभेदाकवीकहैतीनभा
नकीनप॥स्वकीयापरकीयाअवर
सामान्यास्वविचार॥स्वकीयाकहीये
आपनीपरकीयापरतार॥सामान्यान
पिंकहैजाकोधनाहीप्यारपतिको
अतिसेवाकरैशीलसुधाईलाज॥३॥
सवैया॥देषतिनेनकीकोननमेंअप
गनहिंमेंमुशकानाकोथानो।बोल

नबोलसकंठहिमेचलैतेपगमेंन
कहूंअरुजानेसुंदरदोसनहीसु
पैनेअरुजोभयोतोमनहीमेविला
नोमेवसथावसथाइसवेफुनिया
कीसथाइसथाइहिमानो॥२१॥दोहा
सोइस्वकीयातीनविधिकहेमहाक
विराइ॥मुग्धामध्याप्रगलभावरने
त्रिविधवनाइ॥२२॥अथमुग्धालछन
दोहा॥जाकेतनजोवनफलककफ
लेकैजोछकछाइतासोमुग्धाना
यकाकहेमहाकविराइ॥२४॥चोपई
बिलकैअरुवत्राहतेहेतनसुंदरजो
वनजोतनकीचिनगी॥थिरताइ
कीआवनिपाइनलेफुनिवेच
लताकीउंगेउंडगीवनियान
कीयोयुनिपावतिहे॥ स ∵

मोहे निकसें गीसु या सौं पगी । जि
न आंखि निसु यों बिलोकि निहें अ
बने अंखियां तिरछाइ न लागी ॥ २४
दोहा ॥ ताम्रु गयो है भांत के पंडित क
हत बिबेक कहियें एक अज्ञात यौ
यौवना ज्ञात यौवना एक ॥ २५ ॥ अथ
ज्ञात यौवना लछन ॥ दोहा ॥ अपने त
में यौवन आयो जो न हिं जानें बाल ॥ ता
हि कहत अज्ञात यौवना हे दरतवी
र साल ॥ २६ ॥ यथा सवैया ॥ धाइ सो या
इ कै याइ कहौ कहि धाइ कौं पूछिए
कौन ठई हूं वे ठि रही निसि चिंत कहा
सु निमो हि सवे सुपि भूलि गई है स
हदेखि डरान इफें उपजी उठ में जउ
पायन ई है का बिकली सिहीका लि
पैरी अब छोट हे पारि सि आज भर है

२८

रसि
५

अथज्ञातयौवना॥दोहा॥यौवनआय
नेदेहमेंआयोजानेवाम॥कविमंद
रतासौकहैज्ञातयौवनानाम॥२९
सवैया॥छातिनितेवलषेंडलहींके
अलीनहैंकीमनसाललचानी॥ऐ
सीनवेलिकीनायकहूजेरिआपस
मेंसवऐसेंवतानहूसुंदरयौवनरू
पसराहतसुंदरिआषिनहूंमेंलजानी
ऐठवचाईसवौनहूकेनिजदेहकोदे
षवहैप्रशकानी॥१॥अथनवोढ़ाल
छनं॥दोहा॥प्रथ्यापनमेंबाहियकहैं
नवोढ़ाताहि॥सकुचतितउरपतिर
तिकथासुनीनभावेताहि॥१॥नवो
ढ़ानकीरीतयहनवभूषनकीवाहि
लाजकरतऐसीलेंमेकोकरिसकेस
राहि॥२॥पद्याकविन्नजाकेरूपआगेरू

परतिकोरतीकलागे॥ तिलभरि
छविकेतिलोतमानतूलहै॥ संदर
अलवेलीनवेलीवनी॥ उलहतिअं
गअंगअंगरंगरंगपहिरैउकूलहैकन
कमनकहोतभूषनवनकवनेकन
कवरनतनवेपैकैसोफूलहै॥ अली
नकीओटह्वैकेविकछिगहगहेकै
टौरिटौरिटौरिउरउरदेषजातहल
है॥२१॥ उनमें॥ षेलतहिंउलहनसंदरस
हेलीसाथसोनेकीसोवेलअलवेली
सीवहूनई॥ आपसमैसविसवसरा
हतहै तोहिवाहिधाइकसोडीठला
गीजाइगीरहोवई॥ तवमिसवालिके
सैोषालषालहीमैंआपलालति
हिकालवहवालैअैसहालमैंभई॥ आ
बैमतिआइसषचीपरिफांइवाके

सं
९
6

तियाकीमाईआजभौंनकेंकोंनमेंगई ॥
३४ । अथअनवोल्हा ॥ सवैया ॥
गौनेकीरातिकीभोरहिकैंकोंनमेंबैठि
रहीहुतहींअनवोले । हाथसोंछाति
छपाइकैसुंदरिनारिनिवाइउराइ
कपोलैं । देषनकोंजुरिआईसवैति
यननंदजठानिकरेंजुकलोलैं । प
कहेंसेंइकुवाहिगहैं । इकुअंचरुषें
चकेंघुंघटषोलैं । ३५ । अथअनिछावचन
वोलतलछनं । दोहा । शकुचवचनतउ
दरनिहलेज्ञापतिसोंनेकपताइतो
सोविरुअवनवोलेकहेमह्राक
विगाह ॥ ३६ ॥ अथसवैया । पगसोंपग
पेहुरिपेहुरिसोंकहिसुंदरजोपति
जोरगही । कुचदोउगहेकरपकरि
सोंकरपकहिंडुवोरिगाढ़गाही ॥ २

ह्निं भानलियेंउरप्रीतमकेसंगसोव
तहे॥लउसीउलहे॥अलिहेंतोरहे
थकिसीछविदेखिपेरानिकरीफन
जानकहे॥२७॥याहीकोभ्रमतोनक
वित॥केवनसीकायाहीमुकुंदन
सीहैगईपेसुंदरसिथलअंगसल
रैनैंजिगनैं॥आलसवचनवलनिच
लहेंभूषनसकुचतिसैंनमनसुरति
कोंतिगनैं॥मेरेचितछारसीछवी
लीकीघटछविछिनमरिछुटानिन
अनहूंलैंदगनैं।संगभरीअविअरन
सगवगोअलकनउगामगी॥अल
कनिउगामगीउगीनउगारिवली
छिगनैं॥२८॥मध्यावर्तने॥दोहा॥ला
जकामजाकेजवहिंतनमेंहोंहिस
मानसुंदरमध्यानाइकानमैंकहै

सं
८
7

सुजान ॥ २९ ॥ यथा सवैया ॥ जो फिर क
रौ टरो न मैं हिं बिछुरन सम होत छ
नी लागी रहै लाज लागति है प्रति
ही ॥ औषि मूंदि रहै पिय मूरति नै देषि
जात षोल तही बोली जानि बुचरी स
कन ही ॥ पिय पास परैं के लिकै रं
ग्र कम रै तऊ सो ॥ चित ही रातिजा
ति ऐसी इहि गति ही ॥ सुंदरयौं काम
कै सकै कोष कै उंबीच वाम मन सो जो
ली न होत सुमति कुमति हिं ॥ ३० ॥ या
ही को सरंनान यथा ॥ सवैया ॥ बाल उ
ठी रति कै लकि पं क विसंद रीसै रू
ति श्रृंगार सौं हैं । आरसि मैं सुष देषि सं
को च निसोच निलोव निहान लजो है ॥
लाल हसैं इहिं बीच रही ललना पि
य कौन किकै निरछो हैं ॥ यौं छिक

पोलग्रंगोह्रनझोठ ग्रैमेठिनिग्रोषि
निमेठिनभोंहैं ॥ ५ ॥ ग्रमग्नकवितं
पतिकरनरनि संदरसरस ग्रतिबा
गेरतिपतिरतिकोटिकसहैं ॥ सको
लालकीमुजानिघरललनाकोल ॥
मैजानुगाह्रैंगहीयौवैंग्रयरकैरसकें
नासेमधियाकेपायपियकीकरिपेंग्रा
हरहोहैं उवाह्रैंग्रोमेंग्रुरनिहंसकोमे
रेंजोतेपंचवानंपवंपंचवाननिकेवांपि
चह्रोउहूंग्रोरउह्रंनरकसकों ॥ ५ ॥ ग्र
थग्रोह्रावनेने ॥ दोहा कामकेलिमेंग्र
तिवढरपतिसोरंतिसोंप्रीति सोईग्रो
ह्रानाइकाहैयाकीयहरीति ॥ ५ ॥ ग्रथ
सवैया ॥ काह्रग्रलिंगनग्रासनछुवनकी
नेग्रनेकनकोनगनावै ॥ गोरतिमाननी
नेकनत ॥ पतिकीह्रुनियाह्रिनकोरि

सं ८

नमावै भौरभंपियजानेन॥ जैसे२
नैपरपघन्नइचलावै॥ अंचलसौंपछ
किमोतिकिमालकौंसुंदरशीनललता
ईडगावै॥ षष॥ अप्यौकासुरंनानयप्या
सवैया॥ ससरंगभरेअंगअंगपियापिय
सोइगइसुषलेसुषदै॥ इहिंबीचजगैह
सिनूउचरीअतियापरजैठिगईपरके
ऊवउपरदेष्योनघनसुंदरआठकौं॥
अोकसुअेसोलसै॥ मनहूंमनमथके
हाथिवकाजमहावतनेजावनअंकु
सलै॥ पुनः सवैया॥ सोवनहीरतिके
लिकियेंपतिसंगत्रियाअतिहीसकुचा
ये॥ देषिसुरूपसषीसबसुंदरीफिर
हीठगासीटकलाये॥ केउकिघोवा
लगेपा॥ ऊवउपरछुटिरहीलटियें
छविछायें॥ वैसोहेअोटिमनोग

जथा लमहेंसभुजेसलैंगुगलता॰
वे ॥ ४४ ॥ अथ प्रौढा विपरीत ॥ सुरतांतथा
सवैया ॥ विपरीत रतीरति राजि विलो
चन राधिका राजत नायक लैमें ॥ दग रंगभ
रेअलकै विछुरी मुषकांति लसैमुक
ताग लमैक विहंदरफोरेउहूं कुचकी
फलकै रतियो ॥ उरष्यलमें हलती पान
रचैवनिदैम करधज मानो तरैजमुना
लमें ॥ ४५ ॥ अथ धीरादि भेदवर्नेनं ॥ दोहा
मध्या प्रोढा मानकरैं जबतनव पु
नलषिलीजै ॥ धीरा पकअधीरा हू
जैधीराधीरातीजै ॥ ४६ ॥ अथ धीरावर्नेनं
दोहा ॥ कोनहूं पंकरमूंजमिमतिज
ति सहोइजानाइ ॥ धीरा को लछनन
यहै कहैं महाकविराइ ॥ ४७ ॥ अथ मध्या
धीरा लछनं ॥ दोहा ॥ मध्या धीरा नाइका

है नाकी यह रीत जाके बचननि में
कछु रिस है ॥ एकी प्रतीत ॥ ५ ॥ यथा
सवैया ॥ आयहो मेरे मयाकर मोह
न मो कों नामानो महा निधि ठटो ॥ ५
आ फेनो मनो महा निधि हूठौ ॥ आ
न कोवान के देषत संदरसो इमिले
निये हाइ जो हूठौ ॥ के सिविराजत नी
कीन इकसको अग्रगुरी में अहूप अगुठी
प्यारे के लाह मिप्यारि को पीन बेन
री सोते समस्फो सब कूटी ॥ ५ ॥ अथ
मध्या धीरा वर्नने ॥ दोहा ॥ बोले बोल
कठोर अति सके न कोप दुराइ ॥ मध्या
अधीरा कहत हैं ताहि महा कविराइ
५ ॥ यथा सवैया ॥ साज समें बहुरा
नबराइ के ॥ आइके बाहिर कौं फिरि
भोरे ॥ काढि गये चलि वाहि गला

मन्हिं सुंदर आछे बनाइकै बागे । आ
नतो लोचन मैं सहि लालन मानौ
मेजी ठके रंग मैं पागे ॥ लाजत जी ड
रडारि दियो तब मन तो हरि नूलट या
गनि लागे ॥ ५३ ॥ अथ मध्या धीरा अ
धीरा वर्ननं ॥ दोहा ॥ कछु डर उर बैं क
छु प्रगट करैं जो मान ॥ मध्या धीरा धी
रज हैं ॥ सुंदर नाहिं बषान ॥ ५४ ॥ यथा स
वैया ॥ उठि आदर कीनौ पिया पिउ आय
कहूं रति कै सुख तें ॥ दृग मोरे न भोंह स
कोरी कहूं न जनायो कहूं रस ना रु
ष दैनें ॥ विक की छिग दै दृग भीत
र भौरके सुंदर अंतर कै दुष दैनें ॥ सु
षि आभरवान कहूं सषि सो कहि
वे को भई न कहौ मुष बैनें ॥ ५५ ॥ अथ
प्रौढ़ धीरा वर्ननं ॥ काहू मिस करि

कैं कामिनिकेरै प्रकासहरनिकैं
रुषी हूं रहैं कहि श्रीपद्माधीरानाम
प९॥ छप्पाफाकैंस॥ आवनहीं आद
रसैंउदिक्षा ईश्रागैंलियमी ठौवो
ल संदरजनायौ नेहू जियसौं वै॥
ठौ रैले से जयरश्रापन ३ सरी वै-
ठौ तहां कहै लाल श्राउ लागिम
रैहि यसौं॥ यरस्रुनिभौं झूनिवफा
इसनराइनैंम कछु सिसिवालिषि
कहूं पकैं तियसौं॥ जवजायजानी
नवपासआनीमु॥ शकानीनाहूं
सषीसौं रिसानी रीसानी हैं पियसौं
प२॥ अथश्रीपद्माश्रयीरावनैंनं॥ दोहा
सापरायनाइकनिरषजाकैं अतिरि
सहोइ॥ विजकैं देइउराहनौ प्रौढ़
अधीरा सोइ॥प२॥ छप्पा सवैया॥ क्रिग

वैठिहैसुंदरवैठिहींगी॥ जिनकेनि
सिनेहकेपाफसियें॥ वनितेयोसुनि॥
हैवतिज्ञानिकहूकोंछ्ठनिघाल
ति॥ औरनकेवसियेंमोसोंहहाहू
सिलैहोकहाहसिआयेजहांवत
हांहसिये॥ रिजवारनहोरि कवार
हैं॥ तेजेरिझावतहैं नमसेरसियेम
च्छ॥ अलसानजेभावतलगेनखेग
नकियोछतरातसोवोलतहैं॥ क
विसुंदरऊलट`` औरसनेजेइ
नेपरसोंहकोंरैसुजहैं॥ तिनकोअ
वकहाकहियेजिनकोंसपनेऊ
नलाजवईकवहूं॥ जगमेसविश्रो
छयहेसवकोपिसुभाउकौश्रोछप
नाहिकहूं॥ यरं॥ अथश्रोढापीराअ
धीरावर्ननं॥ दोहा॥ धीरजधरेंअधी

रजन्हिकौंग्रपियसौंमान॥प्रोष्या
पीरासुंदरताहिवषान॥९॥यथा
सवैया॥आयेकहूंरतिमानिविहा
रितिहारिकैप्यारिकछुनकहो
है॥वैदिरहीछिगमोरैनहीहगधी
रजमुंदरयाछिगहोहे॥काऊयहो
करकामिनिकेउरआसनिकोपर
वाहुबहोहे॥ऊंचेरसामलेबोली
हैयाहूमसौंतुम्हसौंरसकोनर
होहे॥९॥अथखंडितानिशालछने॥
दोहा॥जासौंपतिसुप्रतिदिनकरेति
यसुजेशुआहि॥जासौंघटहितना
हकोकहेकनिशातांहि॥९९॥आ
लेपिछलेगाहुतेंनहीवसतेवि
चार॥९२॥यथासवैया॥आपस
मैमदिरमैबैठेदोउसोतेर॥ः

सेतिहीसमें आयेकाऊपजबोल॰
कहिहै॥ एकसोकहेकिआवश्री
षिमंदिषेलेहमयाहीमिसवाकी
नोअवश्राषिमंदिरहैहै॥ तोलोश्रा
रहैदरपकरश्रेकभरवाकेश्रय
रनकोपानकरगाद्रकुवगहैहै
आलीमेंश्रवेभरहीलालकेपछा
लदेषिदेपाइनभातिकोश्रेसेबह
वहैहै॥ ४५॥ इतिस्वकीयासमाप्ता
अथपरकीयावननं॥ दोहा॥ उरउ
रेपरपुरुषसोंसुंदरकरैजोप्री
ति॥ तुयचबराईवरनतहै॥ परकी
याकीरीति॥ ४६॥ यथ्यासवैया॥ वेन
केहैसनेकोनवैनपावेसुंदरला
लेकहीकोनषैनेनेनरुरियब
है॥ चोगानीजिठानीसासमनद

वैसैंश्रीसपामस्राशनतैंडवेनउ
सासमरियतहै ॥ वैठीभोनकौंन
मैंकहीहूएकवातहमकैंहैंगीवे
काफकेवषानकरियतहै ॥ अव
हीचवावचलीजेहै ॥ वुपरहेसाइ
गोकुलमैंफूंकिपूंकिपाइयरिय
नेहै ॥ १४ ॥ दोहा ॥ उमविदयालहि
नाकुलटावदिनामानि ॥ पश्चउ
शयानादिहैसवपरकीयाजाति
८ ॥ श्रथउमावर्नने ॥ भयोहेतहैहे
हगोसरतिजनीनप्रकार ॥ जउरा
वैउभासवरसरनिगोपनादार ॥ ध
यथासवैया ॥ मागेसवानिपद्राव
नकोसवकोमनमोहूकौठेलिव
ठेय ॥ पासिमवैपिजमानिकेसंदरा
कोतिमहोइसोकाहरिथिय ॥

भौरै अनारनि बीजनि कै मेरो माकु
नक मांतिन कौ सुष दैनेये ॥ तीषन बौ
चकी चोट नमांनन चौ थे हौ ॥ लेत
जे बैठि गजे पे ॥ ९ ॥ अथ विदग्याव
नैन ॥ दोहा ॥ कहै विदग्या नाइका ता
कौ द्वि विध विवेक ॥ वाग्विदग्या ए
क है क्रिया विदग्या एक ॥ १ ॥ अथ वा
सवैया ॥ सुंदर राजनि कै मंदिर कै प
छिवारे ह्वै सुंदर वाटिक काई ॥ वा
है कहे लो कछु पै समझी चौ ॥ नव कौनि
है बातनि मैं चतुराई ॥ पूछि पराेसि
नि कौ मिस कै उत वाहि मैं पी कौं स
है बुझनाई ॥ साथ चलौंगी हौं का
लि कौ जातु ॥ मी देवी के देहै पूजन
माई ॥ २ ॥ अथ क्रिया विदग्या ॥ सवैया
जान ही बाल अलीन मैं लाल कौ पा

सुं
१३
13

छैनैं बोल सुमोमनु रागी कौं लखि
ये लखि जाहिं सखी लखबे ही के ला
लच बे रस पागी ॥ छाडि दई सब सा
थ कि सुंदर ॥ यौं डिगरी डिग है पगि
आगी ॥ फेरि कै नारि कसो चल नारि
मौं टेरन के मिस हेरन लागी ॥ ३२ ॥
अथ ललितावर्नन ॥ दोहा ॥ जाहि
मीत सौं प्रीत ॥ प्रति लखि सखी गु
नता हि ॥ कवि सुंदर नारी नि मैं क
हैं ललिता वाहि ॥ ३३ ॥ यथा कवित
प्रीति भई ली भई वा पै नित नई
नई हम सौं डुराइ हू दई का है कौं
करति हौ ॥ हिरनै तें होत सुख हि
त की सुनैनैं गात तिनहूं तैं सुंदर सु
धार कैं धरति हौ ॥ एक तन एक
मन एक जीव एक प्रान आप

समैंउहिनकौंपकसी अरतिहै॥ पू
छतिहौंतौहीजवकैसोकाऊकौ
नकव॥ अजानहूकैसैतव औद-
किपरतिहै॥७४॥ अणकुलटावने
नेदोहा॥ निसदिनजोकरतिकथा
सदाकामसोंकाम॥ मीतअनेकनि
सौंरमैकुलटाताकौनाम॥७५॥ य
थासवैया अंवरजोरेहै॥ अलवे
लिरंगचलचंचलहैवपैतैसुंदर
नैनकीसैनहिमैंजअनेक॥ अना
गति आनिनिचौनै वैठिकरोघनि
मोकउहोउफकै॥ उतिकैसुरिकै
सुसकानै॥ नैाहिलैंजीकोपरेक
लिभैलैाचलेकछुकामकलोलकी
वौनै॥७६॥ अणअनुसवाकेभेदवने
नेदोहा॥ कहतअवशायानातिविधि

सं
१५
14

नदोषकयहैहैभेद॥ विनसमनबैार
मेहेटकौपावैजियमेंछेद॥१७॥यथा
सवैया॥ केसेहैंकुंजकेसुंदरफूलवि
राजतपातनजराकजहोसे॥ यामैंतो
आवतपावतहोपतिकोरतिकेलि
कोरंगरसोसो॥ आयोवसंतवियार
वैहै अवतोयहदेखियेगोउचलोसो॥
सोवहियोपुनपानकहोसुख॥
हैगयोप्यारिकोपानकसोसो
१८॥ दोहा॥ यौंसोचनसंकेतठौर
कौआगैहोइनहोइ॥ हजोभेदअ
नुसायनकोयहजानसवकोा
इ॥१९॥ यथा सवैया॥ सासुरेकी
वलीवाहरिवागविलोकितहीं
अखियाभरिआईजाननहाजे
सबीजियकीतिनको ॥

नैमैंआनतनहीसमुझाई॥देषविना
यहैलैह्निमलीरतिके॥लिकेठाह
रकोपछुनाई॥जानजहोकौंनरू
पुनसुंदरमंदिर॥सूनोबनीअवए
ई॥छं॰-॥दोहा॥पियआवैसंकेतनठौरते
तियअटकरतैंजानै॥नगईहोपछु
तानजुतियसो॥अनुसयावषानै॥
यथासवैया॥हरिआपजवैसिरफू
लथरैंपकैंकरसोंकरकोपनई॥
नवनागरिजामैंकिवागमैंहैंसुर
झाइरही अनुरागमई॥पछुतातम
नोमनहीमनमांझकैहैसषिकाहू
नमोहिदई॥जिहिंठौरहिंषेलकौं
लालगयेहैं कहाकहियेअलिहौं
नगई॥इतिअनुसयानसमाप्ता॥अ
थमुदितमालछनं॥दोहा॥सुनतभा

वतियवाकोफूलैंजाकोगाततासों
सुदिताकहूतहैंजेकवितासरसा
न॥८३॥यथासवैया॥लोगवतानगाये
सिरोरहरुरातिजगेकौंवलीसव
कोऊ॥मंदरमैंदिरहूनोइहांथ्वको
रथवारेहैंनोहिमजाऊ॥सासकही
नवहीलषिहीलऊरीऊलहीचर
हीयहूसोऊ॥फूलिगयोहानिवा
नयोंगातसमातनकेतुकिमैंऊ
चेउ॥दोहा॥८४॥इतिपरकीयासम
मा॥अथसामान्यावतैने॥दोहा॥ता
सोसामान्यानियाकहैमहाकवि
राइ॥जाकेमिलिसवभरमसोंथ
नलीजेउपजाइ॥८५॥लटकिम-
टकिमुसकाइमुरिकरकैटाछि-
सिंगार॥वजदामनिको ःः ःः

द्दामज्ञवग्राये देषै द्वार ॥८८॥ कहैं
अमसेभोगाउषितावक्रोक्रगवि
तानाहि ॥ मानवतासामासुनियप
उनीनेग्राहि ॥८७॥ अथअमसेभोगाउ
षितालछने ॥ दोहा ॥ पियरतिकरी
क्रोइज्ञानियसैनिहि देषैअनषार
सवरू ॥ अमसेभोगाउषिताकहै ॥८८
यथाकवित ॥ बिछुरिअलकैनैनर
सभरेजलकतफपकनपलकपै
श्रेऐछबिछुईहै ॥ अदलवदलगये
भूषनसकलहिहेदरअपरमेंनय
नलगाईहै ॥ जगरजगारज्योतिश्रै
सी ॥ अगहोतकंचनकीवाहीमानो
श्रागमैतपाईहै ॥ मैनोहीठारहय
लेनवाकसाईकीसहनी ॥ उधा
राईदेषोकैसीहाकेग्राईहै ॥८९॥

दोहा ॥ कहौं वक्रोक्त गर्विता ताको
हि विध विवेक ॥ प्रेमगर्विता एक
है रूपगर्विता एक ॥ ९ ॥ यथा सवै-
या ॥ सखी तेराई कंत भलो जु निरंत
र भूषन तो हि वनावत है ॥ हमको-
तो हमारो इ ॥ प्रीतम के जब वह कहि
यो हि गत्रावत है ॥ जब सुंदर हौं ग
न हूं ने पहिरो तन वयो कहिके उत गा
वत है ॥ तब सूरमों मोरैने न लगैइ
तनो इन नअनंतर भावत है ॥ १० ॥ दो
हा ॥ अपनैं ननके रूपपरि जो नारी
गरिवाइ ॥ रूपगर्विता नाइ का ताहि
कहै कविराइ ॥ ११ ॥ यथा कवित्त आ
नन हमारे केत मो सखन संदरये
वैं वन करत का फकहूं ॥ न अबात
है ॥ निरषनि निरषिं आरसी ::

षिनकिललचातवाहतनवकोमन
कोलोचनललमानहै ॥ औरदेषोक
मलनकेभौरभौरेदोरनिहैवैठि
वैकोआसपासआइमंडरानेहै ।
कोटमतिअथरनियाउरितेम-
गीआलीविउगनरविउरनहोहा
थहारजातहै ॥ ९४ ॥ अथविवुधमा
नलछनं दोहा ॥ पियअपराधीजा
नतियह्रूठह्रूषिहोइ ॥ तासमथ
केरूपकोमानकहैसबकोइ ॥ ९५
लघुमध्यमगुरुकहतहैतीनभां
तकोमान ॥ औउपजैतेसेमिटैमा
सवकरोवषांन ॥ ९५ ॥ अथलघुमा
नेवनने दोहा ॥ औरनारतननेदेषत
पियकोदेषिजनीयअनषाइ ॥ यो
उपजेलघुमानकनिमिषालहि -

सुं १८

17

मैमिटिजाइ॥ ४४॥ यथा सवैया॥ यियै
देषत देषौं जे औरति या टगा सौं रषि
या कित हौ वदलै हरि जासौं कि
मानवती हि भई इहि भांति म॰
नावन कौं विमले॥ कहि सुंदर
चातुरी सौं कि येगान ये जान कै
तान मैं चूकि चले॥ न रह्यो गयो
वोल उठी तज मान कह्यो हसि
सो षभले ज भले॥ ४५॥ अथ मध्य
समान लछने॥ दोहा॥ और नारि
के नाम ले बातें करै सुजान॥ यौं
सुनन के होइ मामनी सो कहि
ये मध्यममान॥ ४६॥ यथा सवै
या॥ पो है है पीउ पियाय लिका
कछु काम कथानि को भेद उ
वाह्या॥ सुंदर मोहन न सुष नैं इ

कुनागरिनारिकोनामनिकाहो
प्यारीदयोसनमइकरोटतैंजा
कोभावनह्वायोनिहारौं।मानमै
भारहोलटकोरथमानोमनमैं
थकोकरमाहो।९।अथवानकर
नकोमानअथ्याकवित।आयोसुरा
त।छठीकहिनारीकोमासोमिलाव
तहेसुषकोअव।जानेहैंजानना
हिनह्वासोंतोवातनिकोनेमै।जा
इजैरजव।प्यारिसोप्यारेकहो
करजोरिकैनेरिसोंनेरिहिए
छुतहीसब।हेदसोंहकबोल
तयाततकालहिमानतजोतर
नीतव।९।अथगुरुमान।दोहा।प
तिश्रौरतिश्रननकरितियतकि
विहरिसाह।उपजतहैंगुरुमान

से
१८

नरुहूंदैपकैंपाइ॥१०॥ यथ्यासैवे
या॥ लालकेभाललग्योलखिजावक
पावकसेभयेनैनप्रियाके॥ नाहनि
हारिनिहारनिलागेनयेदृगनैके
नउनप्रियाकेहृदैरपाइनप्यारो
पगयोवहि॥ प्रेमसेंकलासहियोके
फूलिगयोमनभूलिगईरिसदृहि
केवेदगिरेसंगिन्याके॥११॥ अथप्रछ
छ्नायकावर्ननं॥ दोहा॥ उनमम
पमस्रपमस्रफदिव्यस्रदिव्यवे
वेक॥ पसैंवरनतनाइकावा
हैंग्रंथवेवेक॥१२॥ नानैयहसंछे
पसोंसुंदराकियोरविचा॥ वरनन
श्रोवेनाइकासिंगारेरसकोसार॥१३॥
प्रोषितपतिकाखंडिताकलहंतरि
तानाम॥ विप्रलब्धउत्कंठितावासक

सकसकसजावाम ॥ १९ ॥ स्वाधीनपति
काना इका अभिसारिकागना इ ॥ आठ
प्रकार ज्ञ भेद पवर ज्ञ भेद पवरनन
है कविराइ ॥ १७ ॥ अथ प्रोषितपतिका
हेरूा ॥ नाके कंत विदेशकौं गमन कि
योजव होइ प्रियविन व्याकुलतिय
सनव प्रोषितपतिका ई ॥ २० ॥ प्रोषित
पतिका नारिकी रीतियहै कविराइ
दसौं अवस्था देसकी व्यापतनाके आइ
॥ २१ ॥ अथ मुग्धा प्रोषितपतिका ॥ दो
हा ॥ मुग्धा प्रोषितपतिका को विरहन
परगट होत ॥ ज्यौं घट के दीपक को भी
नरही उद्योत ॥ २२ ॥ सवैया ॥ परदेशकों
लाल चले पर ह्याल है बाल के का हि
ह्निके बिछोरै मनही मन षेद नदीनि
योभेद सरवी ह्नि सों संदरवानज्ञेरे

अखियां भरि आवत है वरुनी लौं सं
को व ते भीन र कौं यों मुरै कलवेलि
के जैसें कटाछ चलै चलि कै पट टेंग
चल हीं में मुरै ॥ २४ ॥ अथ मध्या प्रोषित
पतिका कवित्त सवैया ॥ गाई है हवभा
न के विलोक आइ वैरन कौं वाक्यो
विरह वलाइ की ॥ भूलि जात न यो न पो
न तू पर रंग आन आन मान मन कौं चेत
नान होत विन चाइ की ॥ काढ़ि है व
लै हैं लाल मथुरा कौं माई आज
ऐसी गति भई गोपिका के काय
कौ ॥ बोलनि हैं जी ली अवलोकनि
लमी ली कैसी है गई हाँ लों पगाजे
हरजराइ कौ ॥ २५ ॥ पुनः जानन हीं अ
व लौंन कछु विछुरें तें विथा यों व
हे न तनी कौं ॥ अलोक कहा पै कही

नपरेपलओटभयेजभईमनहीके
मदरमूमोकेवीतनयोंपरिवाके
लगेलगेराहशसीको। सोतजगेह
गहेपियपंथगहोतनवेतेइतमोउ
मजीको॥५॥अत्थओउोषितपति
कायणाकविन।मीनमगेनकियों
जियगेनकिभारकेमोनभयानक
भारो॥यावकपावकफूलकिशूल
उदरदावपकिसंदरओरोसीरी
वयार॥कियोंनरवारहेवादरहद
विमानविसारो॥चातकिवोलकि
वोटचुभेचितहलवधूकिचकोवा
गे॥ छन॥ उपोजीसदेशगेजानाकुमा
जाइकहाकहे॥ जेसीकरीकान्हे
सीकोऊनकरनहे॥ हमारोलापक
जीभकहालोंकही॥ पैरेजोरजेतीक

सं ५०

20

रैजैतेजीमैकोयरतिहैह्यारिकाव
मनसेदरसमुद्रह्यीमैहूियोपर-
वाहजाइसिंधुमैंपरतिहै॥जानीह
वैयमुनाह्वीकेजलहौतेजाकीज्वा
लविमैवमोवडवानलजलहै॥अ
थप्रोषितपतिकापरकीयाहैसह॥
मीनवसैपरदशाविरहकीवानज
वालडगवैसोपरकीयाप्रोषितप
तिकासुंदरनारिकहावै॥यथास
वैया॥लीजतिजोभरिडेचेउसास
तैआवतहेउरतेनउरै॥भीतरश्री
रकरैनेनतिलौ॥असुआफनिनीवेहै
कौनिधुरेसुंदरवाहतवानवानकर
सोअघरामुघतैमुघहीकोमुरैदीमद
यालवलेदयतेउघदेघनैअसैउरै
छिडेरै॥२॥अथसामान्यप्रोषितपति

का॥ दोहा॥ बिछुरे मीन दान लैबे कौ
मोसों बिरह जानावै॥ नगर नाइका प्रो
षितपतिका सो बनारि कहावै॥ ५५॥ या
नका बिछुरै कंत के मिस कुरंग गम
रि लेइ प्रेम जानावै यालि यें जो आये
पन दे३॥ ५६॥ इति प्रोषितपतिका अथ
खंडिता यथा सवैया॥ दोहा॥ अनतिमा
नि रतिय तिके हूं आवै जा को धाम॥ दे
षि बिरूप अधाय प्रति सब वह खंडिता
बाम॥ ५७॥ रीति खंडिता नारि की कहै म
हाकबिराइ॥ ५८॥ बिरहै बिना कैं रूप
हू रहै रिसाइ॥ ५९॥ अथ मुग्धा खंडिता
यथा सवैया॥ नाह की बात निमें देषिन
घट्ठनना रिन वो द्रा कसो फनिश्रै से
हंदर बागे कि चोलि मैं मेलि के लाये
हो अंचर कलाय रिकै सें॥ खेलवे कौ हम

सं
११
21

कौंयहदेऊजेयौंसुनिकैहरिदौरि
हेरैंसैं॥लाइलईउरसौंहसियौंगसि
हैहूरहैकसिराषैहूंजैसें॥२४॥अथम
ध्याविदितायथा॥सवैया॥आयेदकेहू
रनिमालिकैमोहनभूषनभेषसबैब
लैहैं॥यौंपियकौतकिहूपश्रियानं
बालिकछूनउरेकिमलेहैं॥आष
निवीवज॥आसगीरकहिसुंदरका
जरसौंसमलेहैं॥मोछुवियोअरबि
दविसैंअलिकैमानोवट॥आछुरिटि
टिषलेहैं॥२५॥प्रौढाविदितायथा
कवित्त काननकाननतुमजेलत
सजानका.ऊ्यानननकी॥आभाअ
नमांनिपेषियतुहैं॥विनगुनमाल
उरउरवरीगुपाललालत्यआषैंलाल
लालकौंनलेषैलेषियतुहैं॥ ::

सुंदरश्रयरपीकलीकसीलसतवी
बकोरेकोरेकाजरकेरेषरेषियनहैं।
रेनपपरहकहैतौदेषेतकहोश्रु
श्रोगिश्रागिलाइकोदियालेदेषियव
हैं॥२४॥श्रथसष्ट॥जागेकहैंरसपागेक
हैंहगलागेकहैंनलसौंसाश्रजहैहो॥
वानकहैकेहोवानकहै॥वलेजानक
हैचितयेकिनहैहो॥कोहेकोसुंदरसो
हैनषानकहैवहगतकहैकवहैहो
साकुकहैंश्रपिगतकहैंपछगतक
हैंभयेप्रातकहैंहो॥२५॥श्रथपरकेया
विडिता॥सवैया॥श्रायेकहूंरातिमानके
मोहनमोहनिदेषिभईमनहोनहीवे
रकलोसिगरेजगसोंनुससोंहितसो
नुमहेयहकीनी॥सुंदरयोंइतनोक
हिकेभरस्वासलियेश्रषियांभरिली

नी॥ लालनदोसनहिनकछूविधि
मेंरललाटमैंयोलिखिदीनी॥२६॥ अथ
सामान्याविडिता॥ दोहा॥ नागरइकावि
डिताहेताकीयहवात॥ दूतैषीकैकैं
नकछूलेवैदीकोग्यान॥२७॥ पतिआयो
रतिभवनननकरिदेखिसियानीनार॥ प
करह्योपद्मचेननैपीवीलइउतार॥
२८॥ अथकलहांतरताइकालछन
दोहा॥ पहिलेपतिसोरिसकरैफि-
रिपाछेपछताइ॥ कलहंतरतानाइका
ताहिकहेकविराइ॥२९॥ कलहंतरिता
नारिकीरीतियहअभताप॥ उदवेलेनउ
सासभरइछीविकलप्रलाप॥३०॥ अथ
कलहांतरतायथामैंवैया॥ लषिलाल
नाउरहीललनाकहिमंदरवैठअली
गनमैं॥ हरिआयेबुलाइनवोली ॥

जैवेनववेकूगये ॥ उठिकेवनमैं क
रनेइनतीनोकरीकुनिकैसीतवी
हेतियातवहीतनमैं ॥ १५ ॥ मथाकल
ह्यानरितापथ्याकविन । आयोजादौरा
इहोडलोचनरहेलजाइकेलासकु
जामेनमामोमिहिछिनहे । फिरिगये
पतिहैतोपछुतातअतिरतिपतिहे
रतवायोततनिनहे । कहाकहैम्रा
लीकछुकहिवेकीनाहिनहे । वोसो
हैंनजाइसुनबोलेहैंरोनजाइवा
लैंसुनबोलैंउहेंभांतनिकठिनहे । म
श्राप्ताकलह्यातरितापथ्याकविन । सो
हैकरीकोरकोरहेंदरकिनोनिहे
रहादैभयेह्याथजोरजैसोहोतवे
रोहै । श्रेसिइनभांतनिमनाईह्यारेमा
हनन्यूमामोनाहिहैरहेरीकाठतेंक

रहेगेहै॥ फिरगयेपियजवतरसन-
लग्योजियकह्योयाइतअवसोवन
वनोगेहै॥ यहिलेनोअैसोभयोकेसो
हैअनेसोयहतेजेहोयअैसोमनजे
सोमनमेगोहै॥२२॥ परकोयाकलहां
तरितायथ्यासवैया॥ निनदानिठुर
निजठानतिसोंऊनिसासहुकीकेलि
तिसाइसहो॥ तिनतूलगनैगनसौत
निकेननदीरिनदारूकेदेहदहे॥ इ
ननोकियोजोकेलियेकहिंसदरत
हिसौंआजहोंतुसिरहो॥ सखिसोवत
होकवकीमनमे॥ विधिकीगतिजा
नकछूनकहो॥२४॥ सामासाकलहां
तरितायथ्या॥ दोहा॥ मीतनदानवक
इञ्सकोगिसकरिदियोउठाइजाति
रह्योपछतातझुनिनलईमालकु

उडु ॥ ४ ॥ अथ विप्रलब्धा ॥ दोहा ॥ पठ
वै हौ रस हेट की पिय हि न पावै ना
रि ॥ ताहि विप्रलब्धा कहै पंडित लोक
विचारि ॥ १ ॥ रीति विप्रलब्धान की ओं
सकें वे स्वास दे जु सषी नि उराहनो वि
ना विकल उदास ॥ २ ॥ मुग्धा विप्रल
ब्धा यथा सवैया ॥ सो हन ने केन बला
कौ सषी वन कौं वस्कार इल वाइग इ
है ॥ कुंज कि देहरि वाछिकरी ले पके
लि के ॥ भीन रहै लि दई है ॥ कुंज विहा
रि निहारि ॥ उड़ान न हीं वह देवी केव की
वित ई है ॥ सद र देखी सरोतन ते ये
न खेघन ही मैं सरो समई है ॥ ३ ॥ मध्या
विप्रलब्धा यथा कवित्त ॥ व दाव हरा
न विज रीन टहरान ॥ उठि आई है हर
बरात श्री सैं मेघ उरमैं काम की चपी

सं
४५
२४

टलियें लाल की लपटें नहीं हू रसें-
व भई भेद महेहट जु केचर मैं ॥ सो व
कसी रही कहिं हद रस्यव भो ॥ अति ह
लीन चली हू उगई सो व सर मैं ॥ आपि
आपि आन मैं सो आलोक न आली तन
आपी वात आन मैं आपी हीय सर मैं ॥
प्रोढा विप्रलब्धा यथा सवैया ॥ उठि
और है दृगन को पिया सब नाउ व
मो [illegible] निकेचर को ॥ कहिं हद रधान
रजाइ कै देष्यो तो षोज नहीं कहिं का
रकै ॥ कहिं वीव हिं वात कमानग
है करना नउ सो श्रीसं वर को जव
जा मो वचा उन के हू सषान वध्या
न पेलो हिय मै हर को ॥ ४५ ॥ पर
कीया विप्रलब्धा ॥ सवै
या ॥ अति आनंद सों उ ः ः

ढिगआये थिय पिय देषैं न भीनरहें जे
नेहैं ॥ तिय देटनि उराह्य वि सहैव लीश्र
लिसों कहिके इन भांत निं है । कहिके
टरमे सों कहा कहियै जिन श्रेसि क
रीमषितू यन है । मिसके सो हो सो सि
कुम्मा तिहिथी किर श्रेमो वनाउ को
ह्वावनि है ॥ षं ॥ सामामविप्रलब्धा
यथा ॥ दोहा ॥ करि सिंगार वनि वनि व
हत गई मित्र के गेह । मिले न पिय
पायौ न पन यातें व्याकुल देह ॥ षं ॥
प्रछन्नउकें ठिता लछने ॥ दोहा ॥ को हैते
आयौ न ही पिय सहेट के धाम म । यौं
चिंताज करैं सु जिय उक्रमान सवान ॥
षं ॥ कोपं गोवैं तन न पन श्रति श्रोउर
जे भार री तिय हे उका निकी सषिसे
कहे सुभाइ ॥ षं ॥ प्रगयाउकें ठिताय

याकवित्त॥ काहूनेनश्रापोकाङ्का
हूकामिनीयोंकाहूकामिनीयोंका
हूंकामकीकलोलनिमेंराष्योमोमा
वेरिहूं॥ सोचतयोंमनहींमैंसुंदरनवे
लीनारिकैंमेंहूंयोंविधिश्राजकंत
कोवह्योरिहै॥ इवैनउसासलेसकै
मऊंचेटषिसकैएहुकोसखोसो
भेसीईहालिजोरीहै॥ सबकोविचा
ईअंठवतरीसोयोंरीतननेननिको
कोरनिसोंविनायोंमरोरिहै॥ ५५॥
मध्याउकंठितायथ्यासवैया॥ वात
निमीतनिसोंग्रटकैर्योंकिमिलीतिय
कोउरहोरमिनाही॥ ओरतोहूकनंस
दरवादिनमैकहो ऊरनिलागीहै
स्याहो॥ आयोनहींसषिवूकियेकैसे
कहामनदेतहैनैगउगाही॥ ::

वोपद्वरीकिमित्रोवितवाउकिश्रा
लमनैदकीवेपरवाहीं॥४४॥श्रोद्धाउ
कैठिनायष्याकेवित॥षलनिसषी
मिस्राष्य॥श्रायेनहीव्रजनाथ्याकिधौंर
श्रोरनारिह्नाथ्यकोइकहूपरीहै॥ह्वांतो
किमोहितकिधौंवलायोहैहूकेषि
नह्रैदरकविनकह्निकेहाजीमेजरी
है॥श्रमगनभयोकिधौंकहूश्रोरवा
टव्हैगोहैकिधौंमनौनयोदेकेकाहू
मनहरीहै॥श्रोरवारश्रावेनश्रवश्य
मेरेमोहनजूश्रजोंग्रवारकाक्र
क्रुमरवेगाकरीहै॥४७॥परकीयाउक्ति
ठिना॥सवैया॥सकुसीनसषीनसों
सौंतनिसौंसुपनेहूनसासकीकान
कहू॥कुरसाकिनियानिसौंयोंकहि
ककिउरायेनहौंनडरीकवहूं॥कहि

सुंदरनंदकुमार लियै तन कौं तन कौं
नहीं चैन तन हूं॥ हरि कै हित मैं तौ करी
इतनी हरि कौं कीजे आयै नहीं अज
हूं॥ ध॥ सामामान्या उकै ठिता यथा॥ सुह
कां हूं कौं यन दैव कूत वासि हूं वैस्या वि
चित्र॥ जान हूं आये जो नहीं याने अजहूं
मित्र॥ ध॥ अथ वानकसज्जा लक्षने दो
हा॥ निहवैं मैं री सज परत्रिय आवै गा
आज वासकसज्जा जानि सो सत सर
न कौ साज॥ ५ ॥ पिय मग लषि स वि
सौ कैहूं षुछै सजै सिंगार॥ वासकस
जा नारि कौ कहि सुंदर ग्रौ हार॥ ध०॥
मुग्धा वासकसज्जा यथा सैवया॥ भौ
न कि कौन मैं भीतर जाउ कै वैठि सिं
गार कौ साज वनाया॥ सुंदर सीस कौं
फूल दयो सिर मानो मनोज कौ छुत्र

नचयो॥ देषतिहैहरिहारकोओरन
काहूसषीहूसौंभेदजनायो। वाहूव
रिचनवोढकैमैनहूआपनोयोंअ
तियज्ञगनयो॥ ५॥ अथवासकस
ज्जायथाकवित्त। अवहीनेउवदस्त्रा
न्हायवैठीपाटी॥ पारिओषैंओंजेपैसी
मांजिकह्निकहांलागिहैं॥ जगरमग
रहोतभूषनवसनमनसंदरयोंफू
लतवसंतवीववागहैं॥ देषितिहै
कहांमसकानजानजाननहींप्रीत
मसौंहरतिसौंअतिअनुरागहै। आ
सायोहरसौंरूपटौनअजयोरेंदिपा
भेरेनोमेरीआलीसूमहीमेंफागुहैं॥
५४॥ अथफानायकसज्जायथासवैया
वैठिसिंगारकैदेहमैंयोंअनुरागरि
येउतिजौंनगामैं। अतिजैवलगीसि

स.
२७
27

रफूलनतेलेकैंजरावकीजेहरलौंपग
मैंलागिरहेहैंगाढारकीओरलखैंक
विंद्रदरयौउगमैं॥आवेहिंयेपियजा
निपियानिबिछायेहैंकेजमनोमगमैं
षध॥परकीयावासकसज्जा॥क
वित्त॥सैराँनीजठानीसासननदसवा
षीसवायसेंदरकसरानीकहिकेउक
बरनिसैं॥सारिकासुवानेंहूकेपिंज
राउतारहियेधरनिसैं॥दीपाबुझवाइ
कीयोअंध्यारोहाउराइउनिपोढ़िरही
आइडुपवाइकेउरनिसैं॥आयपि
यरहेश्रासपलिकेकेंश्रासपासदा
वैनिजसासमटकेदेरनिकरनिसैं॥
पय॥सामामावासजा॥दोहा॥पियकेकं
कनलेझंगीमायामुदरीहार॥यहेम
नोरथरााषिमनमाजेसकलसिंगार ५८

अथ स्वाधीनपतिकालछनं दोहा प
तिजाकेअतिवसरहेसदाजपियके
प्यारि स्वाधीनपतिकाहाइमोसदा
रूपउपार ॥ ५ ॥ रीतिपहेस्वाधीनभ
र्त्तकापियकीसदारसेली शैलवाग
अरुरागरंगमेंभावेनागरसेंभावेना
गरवेली ॥ ६ ॥ मुग्धास्वाधीनपति
कायथासवैया ॥ सोवनलेनकरोट
नवोढकीनीठिलकातेपरीहे दषि
नहाहरिसेदसदोरिपेजाइकेनाग
निसीपकरीहे लेउवटाअपनोअ
पनेकरपौंछिकेसजहीमांकपरी
हे प्यारीकोप्यारहनिरिपोरीकिमई
वकहूरसषीसिमरीहे ॥ ७ ॥ मध्यास्वा
धीनपतिकाकवित्त सषीनमेंवैठे
जहांवाहेहांहिरह ठिनहालजनि

हैंगाउजोउनैकनउनैटैं॥सेजपरपो
ढ़ैतैनकेह्नैनकोटफेरराषतलगा
यकहिंसंदरगैरेंगैरें॥लोहियौनेरुछ
नहैपेउतैतूजाननिहैंकहियौहभा
वहाहाहरिकोहरैहरें॥मोहनकेम
हिमैंकैसीकैसीहदरीहैकियोम
नमोहनजूमोहूपेमयाकेरैं॥२०॥पर
कीयासाधीनपतिकायथाकवित॥
अैसैभयोरहैलीनजैसैंजलमेंमाछमी
नहैदरअधीन॥अतिकामकेरसन
मैं॥आलिनमेंमिलीअतिगालिनमें
वलीहैंकलिलाजनिहैंगाडीगईवा
कीविहसनिसों॥लागपोजाय
नहांजोउंगनेनकुठाईठाउं॥प
कभांतिकोहैंगाउउंवोआजस
निसों॥ बोलैंसनगाइजवदो

रिगा हैं। आइ पाइक हियें कहा वसा
ह्ये सेमान समनि सैं ॥ ९२ ॥ सामा मसा
धीन पतिका यथा दोहा ॥ रूपवतीन
रूनी नि गुनि जाके सकल कला नि
ऐसि न हूं तजि देत हैं। यन मो ही पिय
आनि ॥ ९३ ॥ अभिसार का लछन यथा ॥
दोहा ॥ बोल पठावै पियहि कैं पियपें
आपहिं जाइ ॥ सो कामिनि अभिसारिका
कैंहैं महा कविराइ ॥ रीति यहै अभिसा
रिकी सबै समान सिंगार सा हू संका
कपट चातुरी लियें करै अभिसार ॥ ९४
अथ मुग्धा अभिसारिका यथा सवैया
पौढ़ि रहे नैपालिका पर पोसु छज्जपर
ओट दीयें उपटा की ॥ सोइ रही वा इत्र
लीन बुलाइ कहें बोलि बनाइ सटा के
नटा की ॥ जे हरि कैा परको जब ही भ

षोसुंदरदेहरिझातिअटाकी॥अंग
अनंगतरंगइठैंपरमोरकीज्यौंसु
निहारउटाकी॥९९॥मध्याअभिसा
रिकायथाकवित्त॥जोलौंहौंनवली
नौलेकेसीकरीनलवलीहाहावली
वलिअलिलैनमोहिज्याइकै॥आइउ
ठीमंदिरसौंकोनिवाइज्यौंपनिसो
इहांदेषोआइफिगरहीछुपचाइके
वैठिरहीकहाअवगौनाइनकी
सीनाइचुचटकैसुंदरसकोवस्त्र
छूभाइकै॥लेहिनहीहीयकेउ
लासमवहूरैकरप्रीतमकोंअ
परपीसूघरसध्याइकै॥१०॥प्रौ
ढाअभिसारिकायथासवैया॥पहि
लैनोभयोपहिकेसोउहोकहिसंद
रमंदिरमैवजंओरनिवनिआगेहिं

आइउठीवसहराइलोभरगोहसगंध
फकोरनि॥विछुवोछुहूचसकैलैहगा
किसनीजसनैनासपुरीचनचोरनि॥
सुसकानपैआपहिआइगईहै जिवा
इलईतिरछीहगमोरति॥९८॥परकी
याअभिसारिकायथासवैया॥साम
कौस्पाइसदेस्पासषीसनिकैसबहे
दरसोहसवाद्धैवोपेकेभूषनछोरि
परेविछुयानकैवगिदैककरकोद्धि
छुवरिकेरिंचरउरिकसी॥अभिआ
इकेवेंपकेसगहिगाद्धै॥जाइपहू
चितहावहष्यारिजहाहरिहैरतेहै
सगगहाद्धे॥९९॥सामानअभिसारिका
यथासवैया॥पीपेचलेविछुयानके
केकरकाद्धनचोयेकेभूषनछोरे
केसिषदेस्जकाइकोंपछेसषीनें

मिलीजिनकेमनभोरे।जानिकहाइ
लगाइकहासषिहेकछुनैननतोमो
ननमोरेसुंदरपऊपरोसनिसोक
ह्रिदेह्रिगेदोरहगेयकेओरे।७।स्वा
अभिसारिकायथासवैया।आहटपा
इगुपालकैग्वालगलीमैंह्रिजाइके
धाइलीग्योहै।वातनिअैसंगयेजुरि
कैनगमेकोऊमानमआनिविग्यो
है।सुंदरहैतोरहोचकिसीतकिदे
षतिकोअतिगावाह्रिय्योहे।वालि
येरानिकियोउरिकेसडहमिलिकेरि
नहीमैंकियोहे।८।कृस्नाअभिसारिका
यथाकवित्त।कारीघनघटाभारीप
ह्रिरिलेकारीसारीअंगषनिमेदेषितेरो
कजराईहे।कारोहीकुरंगमारवमिकै
लगायोअंगकारेवावाकेंजुकीरुभ

लैहींभिगाईहैकारेपटसुंदरपुहुपगे
थेसबभूषनकारी॥वेनिषीठिपरछो
रिदसुहाईहै॥अैसीसमैअैसीहूकैा-
कान्हरसोंजाइमिलीआजहीतोसिंग
रिकराईकामअाइहै॥२४॥अथअभि
सारिकायथाकवित॥फूलनिसोंगूंदी
मालचंदनचढ़ाइअागइमडीहैसा
नैंगागसरदकेनीरकी॥सोहतहैंस
वननमेंमोतिनकेअाभूषनसातनि
कीजोतसोंमिलीहै॥जोतिवीरकीउ
सकातिअाछिप्रतिदंतनिकीदीपे
उतितेसोपैगुराइकहिसुंदरसरीर
कीचांदनीसीवालमिलीचांदनीमें
अैसेंबलीजेसेंतीरसिंधमेंबलैंतरंग
नीरकी॥२५॥सामान्यअभिसारिकाय
थादोहा॥सुंदरसकलसिंगारसजब

सं. ३१
31

लीवालइहग्रामजायग्रापमनमानतो
लैहैंयनपियपास ॥ २४ ॥ इतिग्रहूनाइ
का ॥ ग्रथमुग्धादिभेदवरननं ॥ दोहा ॥ मु
दरमुग्धानारिकौंलज्याकोग्रधिकार
लाजकामइहडहिनिकोमध्याकेवि
ला ॥ २५ ॥ सोप्रोढाजानारिकौंरसको
वढविकास ॥ जोनियधीरजधरिरहै
कहियेवहधीरास ॥ २६ ॥ जानारीविनु
धीरजहैंकहैं ॥ ग्रधीरानामधीरजधरैं
ग्रधीरजहैधीरावाम ॥ २७ ॥ तियजेछाग्र
धिकहितचटहिंकनिछानास ॥ पर
कीयाकीमरमइहोइनकहूंप्रकास
२८ ॥ सामामानिधकैहयैकेवल
यनसैकाज ॥ इहिविधिभेद
तिया ॥ निकेकहैमहाकविरा
ज ॥ २९ ॥ :: ::

अष्टनाइकाजोंकहीमैंनवमीप्रति
होइ॥८॥वाहैवहैसोविदेशकोह्विन
मैंजाकैईश॥होइप्रवत्सइत्स्यकाक
हिसंदरनारीम॥८॥रीतिप्रवत्सइत्स्य
कानियकीश्रृंगारस्वासअश्रुगुनहेपन
चलेपियाकैरेहियेयहश्याम॥८॥अथ
प्रवत्सभर्तृकायथासवैया॥संदरवा
लेमैंबातकहपरदेशनिकोचलवे
कीचलाई॥वानहैंतैअतिपेनिअवा
नकसोपुनिवालकैकानमैंआई॥
हृक्किसकेनसषीनिसकोवनसोच
निछडिगयोजियराई॥नीविरहीक
रिपीवकहरीफिरिकैवैकौनारीनना
रिउचाई॥८॥अथमध्याप्रवत्सइत्स्यका
यथासवैया॥भोरभयेमथुराकौचले
गयेबातवलीहरिनेदललाकौ॥बौ

सं
११
32

लिसकैंनसंकोचनितैंसुनिपीरिभई
सुषजोतिप्रियाकी॥ह्याष्टिकाइला
लटसौंवैठियेहै उपमाकविसुंदर
ताकी॥दैषैंमनोकरआउकेआषरश्रो
रकछूहैरहीववितांकी॥रूप॥प्रोफ्त
प्रवत्सइरकायथासवैया॥यौसुर
कोतिसुसोहरिगौननसुषारहनीमा
नोकेजकलीहै॥सुंदरसेजसुगयेसिं
गारविसारेजनोछलकाहछलीहै
हैरहीपाहनकीपुतरीसिहलापैऊ
नेपलतैंनहलीहै॥वाउनवाहनवे
नकहैजवतेंवरगावललैवकीचलीहै॥
रूप॥परकेयाप्रवत्सइरकासवैया॥ह
रजूमथुराकोंवलेगेवरीकुरहैंगीजहै
पिछलीरजियें॥हषभानसुतावनिता
निमैंवैठिप्रचानकेयांहिंसुनिवनिवनिसें

निरुवारज्ञवालमैंचीनिकछूकवि
सुंदरजानकोआननिधानतनवाही
कोजाननतेकेमनजाननतेकेवहूजा
ननहैछ्यनियों॥८६॥सामानमप्रवत्स्यप
तिकायथा॥दोहा॥बालमचलनबिदे
शकोंयोंबोलीयुरनारि॥नोहिजपैंते
रोविरहमालादेहुउनारि॥८७॥अथउ
त्तमलछ्नं॥दोहा॥पियनकरेतियसें
हितहितियननजेपियप्रीतियहै
हउत्तमनारिकाहैजाकीयहरीति
८८॥यथासवैया॥पकरैकरसोंकर
औरतियाकोलियैंफिरैंजोवनसामि
नीकों॥इनभांतिनिसुंदरकाफलपै
फ्रनिकोपनहीकछूकामिनीकौं॥ज
गलोचनलालहैलालनकेवऊभाम
नीजाग्योहैजामिनिकों॥अपराधभसो

सं
११

33

अतिआवतयाग निभावेनउपनिभामि
निकौं ॥ ५४ ॥ मध्यमा लक्षनं ॥ दोहा ॥ पि
यके हित मैं होत हित अनहित अन
हित होइ ॥ सौं देषै मैं अन्नु मैं नारिम
ध्यमा सोइ ॥ ५५ ॥ यथा सवैया ॥ अगला
गि जगे निसि जा के जे हौं लिये आय स
गंध की वास बही ॥ ललना लषि लाल के
पैनै करा ह्र निहुरू के पीठि दे वैठि र
ही कवि सुंदर सौं हैं करी कर जोरि कि
ती विनती न वकाउ कही ॥ नव राधा
कहै सषि सौं हसि कै कहितू कि भये
अव साह सही ॥ ५६ ॥ अधमा लक्षनं
दोहा ॥ तिय सौं प्रीतम हित करै
निय रिसाइ विन काज सो है अ
धमा नाइका वरनत है कविरा
ज ॥ ५७ ॥ यथा कवित ॥ श्री

वनज्योदेषीतियआगैंआइलियोपिय
वैठारिकैंकुवैकहोआदरभगतिहै।
सुमनसुगंधसौंजुसेजकेसमीपरा
षितिहिसमैंभयोअतिसेवकसोपति
है॥ सुंदरसुवादजामैंसुधाहूतैंअसी
कनिवालिमकेवदनहूतैंवातिनि
कसतिहै॥ इतेपरवोलेनउमीनस
सौंमनराइक्रुकीफहराइभेहराइसी
उठतिहै॥४४॥ इतिउत्तमादि॥ अथपद
मनीभेदकथनं॥ दोहा॥ अवस्त्रानिके
भेदवैआयेप्रथमवषानि॥ अवतिय
कोअंगविकृतैंजातिचारपहचानि॥४१॥
कैहैंपद्मिनीचित्रनीऔरसंषिनीना
रि॥ हस्तिनिजइनसवनिकोवरनत
हैंविस्तार॥४५॥ पद्मिनीलछनंकवित
कमलकेफूलकैसीवासअंगसुकुमा

सं
३४
34

रकमलसीजोनिजह्रांजलनैंनलहि
ये॥ चंदसोवदननतचंपकसोअंकुस्व
सोवनीठनीसवठौरजहां जैसीच
ह्रिये॥ भावैदेवपूजासेतवसनसोक
विहियें॥ लियेंलाजमानोगतिहंस
कीसीगहियें॥ श्यामावाइम्लगनेनी
वछुनपिकैरैनीजामैंगुनसुंदरप
मनीसकहियें॥ ५५॥ चित्रनीलनेय
थाकवित॥ छुनकटीपीनकुचमीन
सेचपलनैनगजगौनीकोरवारमे
रकीसावानीहै॥ मधुकोसुगंधजाकेसर
नकेजलकोहूंलावीहैनेठगनीनयातरी
मानीहै॥ सुंदरसुरतोमसदकुमारजोनिजि
हिवीचसेतफूलवदूगागोतमहाभखोप
नीहै॥ रनिसैनरनिउपभोगहीमैंरति
चित्रसंगीतसोभावरिंगोचित्रनीवषानी

है ॥ ४४ ॥ अथ संखिनी लछन कवित्त ॥
मोटी लांबी लसें देह छीन ऊंची मोटी
कटि कटि टेढ़ी चितवनी कुच छोटे
छोटे मन है ॥ जाति में विरोध काम ज
लछनी बने वाउ ता वली वैले गाजत
मैं चलते है ॥ दीरघ है रोत पाय थोरे न
वडू नषार ॥ औसे जाके चिन्ह सोई संष
नी कोन ने है ॥ रातो पट भावे न विहार
नमें लावे वार ता को गनद या हीन री
सही सो पुन है ॥ ४५ ॥ हस्तिनी लछन
कवित्त ॥ मोटी देह मोट ओठ भूरे वार
गोरी आपधो रीला जपे टभर षात है
अचाई के ॥ मोटी पाइन पाइन की अंगु
री है टेढ़ी सब ठेगनी सी कूर रुकनि बो
ले वहू राई के ॥ को मजल की है गंध
गयंद के मद केसी हरतन न किये

जाइजासोंसुषपाइकैचलैमंदगतिगि
हैकोयेजाकेनयेरहैहुलनीकेलछ
नपदेहैदिषाइकै॥४९॥अथमध्यमाबोव
ानि॥दोहा॥जासोंवातकैहैसनेनिय
कोवरुविश्रम॥यासरहैंपरतीतस
वकहियेसषीसवाम॥५०॥येहैंकाम
सषिनकेतियकोभूषनवसनवना
वैदेयउराहनोसिषदैजोनकरिय
तिहासमहसोवै॥५१॥भूषनवनमन
यथासवैया॥जोवनकोजोवनसिं
गारकोसिंगारकियोंरूपकोसरूप
ऐसोअंगदेषियतहै॥नैरअथरन
कीललाईलषैलालनकेलोचनतो
सुंदरसुधासोंसीवियतहैंबीरपहि
रैनैकोयरेमेपीरमेरीपीरमोंगही
केवीरतेवैहियेवीरियतहै॥

औ ऐसें करकों कही लै वारनि सवार
निहू सौं तननि की ओछिनि के गनदीजि
यतहैं ॥ १ ॥ उत्पलो यथा कवित्त ॥ का
हे हूर ही हैं मौन टेव यह परकौं ननै
ननि सौं कहो कौन यों निहारियतहैं ॥
खंजन कमल मृग मीननि के जेतवा
र हैं दरभ यते कों दुयों विदारियतहैं
वार हैं चलाके हैं नानायके हैं ला इ
के हैं नागर हैं नायके हैं लाइके हैं ॥ मा
न सनिदरिमारियत हैं ॥ वाके हैं वि
लास हैं जो ल्याई केवउ हैं ॥ तो विलोकें
नै श्रगिले कों वे पिंडारियत हैं ॥ २ ॥ शिला
यथा सवैया ॥ लालन कों लषि लाज
न लोचन लाभु कह्यो श्रै सोते भलषाए
जीऊं की वातउ रै नजह्मा दृग कौं निव
हें गेतह्मा सुकरायें ॥ स्वदृशो वनरूप

समैंश्रैंसीकोनभईवलिवैसकेश्रायें॥
सीषिविनैवाभलीभईपैविनैवानेक्रु
श्रोरकीऊीठिवचायें॥३४॥जोलरिकायन
मेंचलिग्रायेहैग्रोश्रंवराश्रजहूंमतिउ
रो॥हेहरिकीगतिऊरकेमोंझुडियालहू
ड़ियालहूगाहूंकोहूंउमथोरा॥हेतव
त्यानितहीनितसंदरह्योतितिनेवषि
ह्याहिपेभारा॥कोलोरेहैगोभईग्रल
वेली॥ग्रहोश्रवहूंकपरानसंवारो॥५७
तः शिक्षाकवित॥कोनेहैसववारीजा
केभीतरहीप्यारीवहकोहैंवज्रमारी
जिनवाहरपठाईहै॥जादिनलगीहेडी
ठिनादिनतेनीठीनीठिसंदरमेंविन
तीकेविधिपेवचाईहै॥संत्रनिपन्हाइ
करियेत्रतिमन्हाइकरितेत्रवतिक
न्हाइकरिकोहूकेजिवाईहैकियो

कह्याबाहूनिह्वैसोईकह्योकैसेंनआज
काकीवाटपारिवेकौपाहीपारिआई
है॥५॥सषीकोपरिहासनाइकसोंय
थाकवित॥विछुरीअलकनैनरसभरे
फलकनउठिआईरतिसानिरसिकर
सालसौंपयकेदशनलागेतियकेक
पोलमिमेचौंकापरेनैलषियोबोली
अलिवालसौं॥छापसीकह्यौहैरहीसे
दरिउचतियहूवैसेकछिपौंदवेकौ॥
भईकछुघातासोंजोहीगहिणलूंआ
ईमोहीयावोनिरखाइदेषोउशका
मुखमासोफूलमालसौं॥८॥नाइकाकौ
परिहासनाइकसौंयथासवैया॥देहो
कह्योदिवुपानीकीवूंदकोमुंडनेभा
मीरचीसोभयोहे॥ओकह्योसंदरपा
वकोहैसुपावकसौंनिजनैनभयोहै

गोरि कहे हे शिव स्यों हसियों विधि नाह
रना ॥ उन कूप सों है है लत आछ जवा
में । अवे न लदी जियमे रोज हार है हो
है ॥ १ ॥ नाइक को परिहास नाइक के
यध्यासवे याकवित ॥ ग लाव के फू
ल की लेकर पां वुरी लगाई भाल
मृग मद लायो ओठ अंजन सों ज्यों
फवे । असो रूप कियें प्यारो आवन
है प्यारी प्यास प्यारी ये षि हूंठि वे ॥
ठी थी देनत है तौ तव काजर अ
धरें दे मेन जावक ललाट है न
सो है वे । गोषि जो मति यों कहो स
षी जवे । साधा तो रही लजाइ है मे
है हि ह हराइ है सि है सि गिरि गि
इ मंद रस षी सवे ॥ ग्रंथ हती वर्न
न ॥ दोहा ॥ हूत पनो में अ

तिनि पुत्रन सों कहि हूती वा समे जो रिदे ह
वरने विरह पर तिनके काम ॥ ५ ॥ जो
रिदे वोय था कबिल ॥ सुनो हैं न वो हा
सु पे श्रोव हृदे जान तिन पिय पास पो
हुवे की गत कहा जानी है ॥ यह मेरे ला
ड्वे की लाज की जे व लिखे थात र नह
ने यह आनि हीं अजानी है ॥ पहेर सरी
न के है स दर रसिक की जर से ही सौं
मिलि वो लिया हो वरावानी है ॥ मैं नासी
प का इज व पहर खें दूनार यरनी ति में व
का इन व कैं हू श्रामी है ॥ ११ ॥ मैं ने की
सी कार स कुमार वारसे वार से स्द र
स्य कार क स्मृति में स मानी है ॥ मानि
की माला मोती वे सिर को स्य हू रात मो
ती से द सन सुध मानी के सो या नी है ॥
ल्याई है सो तु लाइ के व लाइ ले उं ला लवा

सं
१८

38

बिलोकैहीभलोमेरोमानीहोमैंजानी
हैं। नैनसुषदैनचितचैन नैसनैवैन-
बैनमैंनकाकीव्यहमैं नहींकीरानी
है॥ ९१ ॥ सैवैया ॥ आषनिभौंहनिमोतिन
कीनछुलेनिपिसीछविवातर ताकी
हायनिसौंनहीघोकरियेमनोपौंनतें
नैतेकोपतकोपलताकीदेषनही
वनिआवैकहाकहौंनाहिकेना-
रिउलेजवताकी। नाहिटैरेंनतवे
कहिसेदरवेसरवेसरकेवुकता
की॥ ९२ ॥ नायकाकोपलकीहतीय
याकविताउी। ठिमौनजोरेपीठिदै
दैवैठेकेरिपीठमंदरावसीठकहो
कहाकैरैनातीसो। तिहारैनेलागीज
वल्याउल्याउजाऊ होतेफेरजा
नीवैतिहारीजौनषानीसौं ॥

कोउपवेगानदिवनिवेहै नपकेछिन
नेहविनकेसेके उजारोहोतवानी
सो॥ हेतोथजाइजाइहाहाषाइगहे
पाइग्रापहीमनाइजाइलाइलेऊका
नीसों॥११॥ नाइककैपतकीहूती कवि
त॥ ननगततेनीकरभोंहनिकोंना
नतिहै॥ तिनीयोरगहीमनकिनीव
गहेगो॥ जेहीमुषमोसोमतरानीग्रुने
मेरीरानी॥ सदरकुमरयनस्यामहोकै
देषैधूसीकामिनीकोजोनकामदहो
घ्रकटहेगो॥ मेरेतोमनायेनेनमान
निहोलषेंलालतोवदेंगीमानकी॥
जागनननवरदेगो॥१४॥ लालअपनेसो
आलीयेतोनरिसेयेवलिकहाभयो
वलिहसेनेकनेदनेदहै॥ वैठियन
वोलियनहिलिमिलिषेलियनकियों

कीजियतकहिसुंदरघौउदैहै॥हा
हादेषिसोहैतोहिकोरिकोरिसोहैं
कियाओसेसमैमाउतेरोओसोमन
मेदहै॥केशोनीकोनाइकसकल
सषदायकहैकेसीनीकोवादनीहै
केसोनीकोचंदहै॥४५॥विरहनिवेदन
यथाकवित्त॥मेरीआलीआगैकाढि
टेढीवालिचलिआयेताचरीतेषे
लतिनवोलनहसंतिहै॥जेसैमीनज
लविनकेहूंनपरतकलविसंथविक
लभईसुंदरससितिहै॥केहूंडोरेरहै
मननेकनसंभारेननतिहा॥रेनिहा
रेहहरिगायतरसितिहै॥ओषितिमैभो
हनिमेसुषसुसकाननिमैठोरठोर
नैरैठगोरीवसतिहै॥४६॥नाइककोविर
हनिवेदनयथाकवित्तकहैंवनमालकैहैं

गुंजनकीमालकहूंसंगसषाग्वालें॥
श्रेसोहालभूलिगोपैहै। कहूंमोरखं
डिकालकुटीकहूंपीतपटसुरद्येहै।
कुंडलअलोलकहूंसुंदरनवोलेंबोल
लोचनहैं। लोलमानोकाहूंसोरीलयेहै
घुंघटकीओठहूं। केचितयाकीचोटके
रीलालनतोतवहीतेंलोटपोटभये
है॥ ४१॥ अथनाइकवर्ननं॥ दोहा॥ उहूंनि
करिसिंगाररसरसहोतहैंजाति। जे
सेवरनीनाइकासोनाइकहूंवषा
नि॥ ४२॥ सोनाइकपतिउपपतिवैशिक
त्रिविधभेदहैताको॥ व्याहोपति
अनव्याहोउपपतिवैसिकपतिग
निकाको॥ ४३॥ पतिपथाकवित्त॥ म
गमेंपरानपरासुंदरभरनउगको
मलअमलअमलभूमिछाउतहैं॥

यनकौं ॥ जिहिंछोरकोंटेकाटकोंक
रपरतआइतिहींठौरयरतेहैं आप
नेचरनकौं ॥ जितछोहसीरीतितकीजि
यतप्यारीनीरी जेहैंतापतहीकीजैनी
रदेसतननकौं ॥ गहैंरजुमाथ्यनिजहाथ
निमैंहाथ्येग्रेसैजानकोंकोसाथलियेव
लैजानवनकौं ॥ २ ॥ दोहा ॥ कहतहैंकवि
नाइकहीकविज्ञानीजौठिनिहारि अ
नुकूलदछनधृष्टसठभेदचारजुवि
चारि ॥ २ ॥ यथ्यामवैया ॥ सोअनुकूल
जोपकैतेंहसरिनारिकहूंसपनेऊ
नजानैदछुनसोसबकोंसमदेखैस
दारहैंजासोसबैसषमानै ॥ धृष्टव
हैअपराधमहोवरजेहैंषिजेरस
ठानेहीठानेसोसठजोकपटीर
निकेलिमैंसुंदरनायकचारोवर्णने

अत्र हूलललक्षनं पष्यासवैया॥महादेव
नूकेजेकीजानीहूमनिहवैकौ॥आपने
हूजीतैंप्यारीजाइगिरिवरकौ॥यैंईव
लेआवैअरथंगधरेईनेपनियाहीतेअ
पिकधीनिरीतिहैगेहरकी॥कपालकी
मालगजषालब्यालकालकूटदाहूती
घोमघतलटकआगिफरकौवाईओ
रमेंदरशिवाकेहितफेरिफेरिमथा
रिमयारियरैकलामथायरकौ॥२१॥
दक्षनलक्षनपष्यासवैया॥द्वितीया
कोदेषिचंदद्वतकोदरमनेदषिवे
कौंजरिआईओगनमेंदारहे आभूषन
वसनवेनायनानाभांतिकेवीनेआ
नआनअनगनसिंगारहैं॥इहवीयम
दरकेभीनरनैनिकरिदेषीहरिसंद
रयोमवैयकवारहै॥अमेंपरीसमंडी

ठिसोरहैंहजारपरमानोनैंनहैनहीं॰
ह्निसोरहैंहजारहै॥२४॥एहष्टयध्यामसवैया
मालीहैफूलकीमालनिसोकरवायि
केतीफिरैवौगुनोचायनि॥सुंदरवासो
किनैषिजियेनत्मजेतोउआपनीशील
सुभाइनिवाहरकाछिदियोदैकपाटनि
पाछिरहीपटतानिग्रसाइति।जापलमें
पलषोलिकेदषोनैप्याइनिवेहोपलेट
तियाइनि॥२५॥सवयध्यामसवैया॥वोलय
हैहुषभानसुताकोंसुनायोहैकान्ह
रैकानहुफेरै॥सुंदरनंदकेमंदरभी
तरकैसोवितैरुचितैरोवितैरैं॥रा
धिकादौरिवलीसुनिदेषनभेदन
जासोगईजवनैरैं॥पाछैतेंआइग
हीपियप्यारिपैलेगयोलंगरयाम
अंयेरै॥२६॥अथउपपनिलछने ॰

दोहा॥ उपपति कहिये जार सों सठता
निह निरधार॥ कवहूं होहि न होहि पत्र
न कूला दिश्र कार॥ २४॥ लागे तेऊ लप
टाहू ले हि जाऊं वेग हेऊ लेऊ ले कैं दो
रूनेह की हिगल मैं॥ अपरको रसपि
ये वाहत नक्ष वोहि येंश्राहट के सीय
कान मन दियें मग मैं॥ सुंदर हरवरा
मउर मैं पपरात श्रमें हैं उरात श्रति
के पकरपग मैं॥ श्रमें उ रियरा ही सो
सर जिजे कैं जीव सो वौं तिन जीवन
को जीव हैं जग मैं॥ २५॥ अथ मध्य॥ कामही
के ध्यान ग्यान रतिकै कथा वषानें मेर
जान पाये श्रान वात नि जाहें भूरे॥ हा
ई भौ वेन वाई जा मैं जो लिये मिवाई
मिलगये वेदाई वानकी झरें॥ सुंदर वि
राम वहै सो कुरी गली मे कहें॥ आपस

मैंमुसकाइकेजहांचलैमुरैं॥ पराग
टमोंकवैसेरसकहापाइयतजेसेर
सचौंपचाइहोतहैंउरेउरैं॥ २९॥ विसि
कलछने॥ दोहा॥ जोनाइकगनकानि
सोंकरैंसदासंभोग॥ वैशिकताकोंक
हतहैंधीरगुनीसबलोग॥ १॥ यथासवै
या॥ कुंदनसेतनचंदसोंआननकान
नैंमुकतानकीवारी॥ देषतआरसि
पाननिषातभुजामोनोसुंदरभोइ
उतारी॥ ऐठीसीआषिअमैंठीसीभोंह
निपेनकटाछलटैंसटकासेछैल
छबीलीसोंकेसेंमिलोंछकिनाकी
मैंऐसीअनेकनिहारी॥ ३०॥ दोहा॥ प
तिउपपतिवैसिकनिकोंकविके
पहैविचार॥ उत्तममध्यमअधम
कुनियहहोतप्रकार॥ १२॥ १

पतिलछ्छनसोरठा॥सामारहेहेरिसाइपि
पतिनजतननिकोकरैं॥बिनतेंरिस
मिटिजाइउत्तमकोलछ्छनयहै॥२२॥
सवैया॥अयेवलेपलकापेललालना
किलषैंअषि॥ओंसनगानी।जानीहैरा
सभरीहै॥नहाँलेमहारसियारसश
सिवठानी।मीगजुकाइसहीलिहैये
कहिसेंदरसैंयोकिपानकेपानी।ते
अपनेकरलेकरकैहरिसौरनेंबोलि
सयारवानी॥२४॥मध्यमलछ्छन॥दो
हा॥मोपियरूठीनारिसौरसनकैन
रिसाइसाह॥सोगअधमअपनकरल
हैनियपेजिनकीभाइ॥कवित्त॥मे
हीवलिआयेलादीठ॥मेरिदेषीबा
लैवैठरहीमेंइमुंदेमरये "कंजक
लीकेआदरकअव कियेआगेहैन

सं
४२
43

यीजलियोबोलीसाबदेकीठौरनैन
हलीवलीहै॥कामकहूंनकछुकही
जैसेंदेषीतैसें रकनकुनिलागीकर
नासिंगारकोबोलननलीहै॥राधकाको
यहेरीतिभांतिदेषिमोहनकीमनसा
यौंआनंदकेफलनिसोंफलीहै॥४६॥अ
यमलछ्नि॥दोहा॥कामकेलिकरवे
कीमनमेंकछुविचारनजाके॥सोवह
अधमलाजउरहोइनसपनेंहूंकुनि
ताके॥१॥सवैया॥जातवलीहिअली
तमेंकाल्हितहांदेषिआइकेदीवाक
काको॥होनोगईगहिलाजनसोंवि
हसीसवआोकदेअवराको॥ऐसोम
हाअनिष्ठोविमसवोसनिसंदरहैय
हऔरुनवाको॥ताकीतूंवातचला
वतहै सपनेंऊंनदेषियेरीमुषवाको

४४ ॥ अथमानीवर्ननं ॥ दोहा ॥ पमा
नीदोऊवचनरवरननैहैकविराइ ॥ स
वकेइनकैएकसेजानौसवैशुभाइ
४५ ॥ रुकमानीकिजइपपरइकुमानीनि
नगेहिसिंदरयोंद्वैयभांतकेनाइकमा
नीहोहि ॥ ४ ॥ रूपगर्वमानीयथासवैया
आपसमाफअलीनमतोकरिधाजरह
सीहरिसौंयहठानी ॥ वोकेविलोविला
सकरैकहिसुंदरवोलीजहारकवानी
उनरैंदइकहाइनसोंवहएडआंषितैरं
झनआनी ॥ मानेगइंदकीमाइवलोग
योमोहनमाइमहाअभिमानी ॥ ४ ॥ अ
पनीगोकोमानसवैया ॥ प्रीतिकछूर
नचैसनिमेंपियवाहरहीवऊनैंसर
मानी ॥ काऊकठोरमहामनकोहैक
हीजवगाथिकासुंदरवानी ॥ आगैंनमा

नववधूदेवहूजानकैचातुरतातवथों
हूरिठानीसोहविसेषामिसहूग्रेसोकियोम
नमोहनग्रापुनहींग्रभिमानी॥४२॥वचन
चातुरीलछनयथा॥दोहा॥वचननिक
रिकरतूनकरिकैंजुचातुरिताहि॥
पमिगरेकविराजमिलिचतुरकहत
हैंजाहि॥४३॥यथाकवित्त॥पहिलैंजुआ
हिमिसह्वालिवोलवोलिदेषिजोस
मीकानदैतोवनीसवग्राहियेजानि॥
कीकथाइतानीग्रोरकीलैग्रेरठानी॥
सोइग्रागेग्रानीजोईजोइभावेवाहि
ये॥ग्रेसिनकोवसकीवासुंदरकिता
ककामइनगतिमतिनग्रथाहसि
ग्रथाहि॥यरसउपजाइवेकीबात
हाथग्राइवेकीबातनवनाइवेकी
रीतियहेचाहिये॥४४॥

अन्यच्च ॥ गुंजनि की लतानि में गुंजत
अलि पुंज कुंजन की गलीन में थे त्रि
विक्रकिति हैं ॥ सबल सबाङ्ग सिरदा
मासन्नो सब हारे मैं हैं न हो भैं ॥ याते ये
गायान हू कति है ॥ बानरी सौं गापिका
को सहेट की ठौर कौ वे संदरसना ई
कहि सिगरी उकति है ॥ जाने जे न जा
नैं नै यों गोपन सौं कही बातन बातन त
जे जाने कैसें तिन नै इकति है ॥ ४५ ॥
क्रियावाचा नरी यथा कवित्त ॥ इनै हूष
भानजू की नेदनी है उनै उ नित्य आनंद
के कंदनेंदनेंदन वखान्यो है ॥ आपने
आपने रोउ बढे हैं अटा निपर सुंदर
कटाक्षनि को न हो लागे करें है ॥ प्या
री हू छी कब ही मिलो गी इन भांतिक
रिके पे को ले हार निज कंठ मो कन्या

यो है । प्यारी द्योउन रुअ तुयवदीहरि
रीति मुंह मूंदे कमल के फूल को दिया
यो है ॥ प द ॥ अमसम सवैया ॥ एक समैं हरि
नैमें वनितानि मैं ॥ सुंदर वैठि ही राधि
का रानी ॥ आयेत हांपियै सैन ननि दैव
लि प्यारी चितैतानि मैं वाहरी वानी ॥ स
न अैसे न कटाछ कियै तिन मैं तम जो
कि की भांति हिं आनी ॥ जानि गये हरि
आयवता इहै तैन हीं मैं निसा की नि
सानी ॥ ध ॥ अथ प्रोषित सो हा ॥ न जिनि
ज नियपरदेश कों चल्यो विछुरके
होइ सुंदर नाइक सव निमें प्रोषि
तक हि सोइ ॥ ध प ॥ सवैया ॥ वारसिवा
रैसे वनि म्हयासि म्हयाकरै सोसुभ
आछे ओउ जे रोने न निहाथ निपाइन
जाके गहोय नकें जनको वक तेरी

सुंदर मो हियें मोंक निरंतर ऐसे है ।
प्यारि पिया को विशेरो । जानत हैं अप
नैंन अभाग ई तें परनाप न वे मन मेरो
ष ॥ अथ अंन भिज लछन ॥ दोहा ॥ जेन
भप के हेस में सपने हूं में विग्य ॥ इहा
यन के फूल समने नाइक अनभिग्य
प ॥ सवैया ॥ मैं जन कै अंग अंजन रंजन
देकर षंजन नैनन वावै । अंवर भूषन
भेष वनाइ अनंत वै कछु की चावा व
ढ़ावै ॥ साजि सिंगार नि संजव छाइ कै
सुंदर मंदिर सूनो वनावै ॥ हूं फेन उ
न ई तें परकूर तें औरु कहा कछु फे
ल वजावै ॥ ५ ॥ अथ अनाइक सहचर व
नैंन ॥ दोहा ॥ पनाइक इन नेक है इन
के कहें सषा निस्यारे न्यारे नाउ कहि
लछन भेद वषानि ॥ ५४ ॥ जो नाइक सों

सं
४९

46

नाइकानीकेंदेहिमलाइ ॥ नमेंसचिवता
सेंाकैहैराखिंसदा रिफाइ ॥ ४३ ॥ नर्मसचि
वऊनिचारविधंनेकविराजवखानि
पीठमर्दविटचेटकुनिश्रोरविदूक
हिंजानि ॥ ४४ ॥ पीठमर्दलछनं ॥ दोहा
कोपवतीकेकोपकाबाननिदेहंज
कहिं ॥ रसपावैपियसोंनियहिंपीठम
र्दकहिनाहिं ॥ ४५ ॥ अथासवैया ॥ औरजो
कामिनिकोटकलासोंविलासिविका
सिकरैवहतेरोई देखिनकोउनकोउन
केवितहोतहैतेरोरुखाइकोचेरो ॥
होहावलाइलैांयोंमतराइविते
तिरहैवहरोगुखफेरोसुंदरयामत
राइहिमेंहेंसयारसहैंतेसवाक्ष
नेरो ॥ ४६ ॥ अथविटलछनं ॥ दोहा ॥ बा
तेंबातेंकामकीनेसकलकलानि

हनपनैमैंअतिनिपुनअसैंविटहि
वषानि। यथा सवैया। काहेको हती
बुलाइ पठाइ निसा यह षोवत है
अहषोई। आउ नहीं वलिये हि लिये
मिलेषकरियेमनआनेदजोई ॥ छा
नीसोंलाइलगाइकेराषियेसुंदरऔं
धेगियापरनोई। वीरकेवीवेदवीवु
नपारियेमैंजोविचारियेसोई ॥ परव्र
षवेदकलछुनै ॥ दोहा ॥ निजवानिनि
नैपियतियहिंदांर्द्धसुंदरप्रीति ॥ नि
नवानिनिमैंअतिवचरयह चेटक
कीरीति। प॥ यथा सवैया। देवकेयो
गतैंआइजुरेगकुंजमैंकाकरुराधि
काराधिकारानी ॥ षालिनवोलिसकै
केहिसुंदरगोनहूंवैठिरहेचुपठा
नी। मेरोसकोचकियोहेउहैंमिलि

सं
४७

चातरवेटकयौंनवजानी॥ याभिस
ख्यानिउहांतेंउहैपाजमुनातटजातहैं
पीवनपानी॥५९॥ अथविहृषकलछनं
दोहा॥ सुंदरषेलनहसनकेकहूंवि
चारनजाहि॥ कुटकैसबकीसदाक
हेंविहृषकताहि॥६०॥ अथसवैयाग्रा
पहिकुंजकेभीतरवैठिसुधारि॥ के
सुंदरसेजविछाई॥ वोनेवनाइसटा
केनटाकरिमायोसोआनिकैराधामि
लाई॥ आलिकहाकहौंहांसिकीवात
विहृषकजेसिकरीहैढिठाई॥ नार
उहांपिछवारउतेफुनिवालिउसो
हृषभानकीम्याई॥६१॥ अथअनुराग
लछनं॥ दोहा॥ केदेषेतेंकैसुनेंचितकों
लागेलागनासोंकविजनकहतहैंवि
यकोअनुराग॥६२॥ उछाहनुरागयथासवैया

वाईसोंचौंपहीवाहनकीविनसौं
विरह्योतिननैननहीसो ।। सुंदरजा
केरहेरसपागिरहेनैननेरसपारसचे
निनिहीसों ।। वेठिसवालसखीनिमें
लालचलेटिगहेलषिमेंननिहीसों ।।
ऊठिकपालनिह्वैनिकसीयोंकिये
मानोहुवेनैननिहीसों ।। ९४ ।। इनान
रागयथाविकस ।। कोकनिकेराघ-
निमेंदेषिवेकितञ्चलवेलीतवही
नैनरूनीकोनापतननैयोहे ।। कछ
रयानषाइककछनसहाइनाहिसों
योवगराइविसराइसववयोहे ।। मे
लोहेठगेरीजानोहुगईहेवारीग
हीवहेजकवहे ।। छोरीवहेध्यानल
योहे ।। जादिनमेंकाहूकीनिकाईने
वषानसुनाइनादिनमेंमाईवाकोसु

स्व
४८
48

सोहालभयोहै ॥ ८५ ॥ अथस्वप्नदर्शनलछनं ॥
दोहा ॥ सुपचित्रप्रगटदृगनिदरक
हैप्यारेकेख्याहार ॥ ८६ ॥ स्वप्नदर्शनतय
थाकवित्त ॥ आजुआलीसुपनेमेंदेषे
देरिकान्हकैसेंठाढेहेंषभानुजूके
कीयारीहेसोभिरिकैं ॥ तिहिठौरश्री
रतैनेनकोऊकहूंदेषियतनयईहमत
मसवमिलीआईचिरिकैं ॥ करतनेंहें
गोमतीकेतीरहूंनरहेगयोजमु
नाकोपैहेंसघसुंदरसुमिरिकैं ॥ गा
पिकानकेंजनिविलासरासमेंनाक
यातेंहारकोकोंछांडिआयेहूजहींकों
फिरिकैं ॥ ८७ ॥ चित्रदर्शनयथामैंया ॥
देषेचित्रमैंटढेहेंकान्हकरटेढेहेंका
न्हटेढेभयेसुहनारिमुरायें ॥ कैसेंव
जावतेहैंमुरलीतिरछेनकिभोंहसोंभोंहन
चायें

चोरी की टेव हूं होंलो परी यह रापिये
बात कहा लौं उराये ॥ मोहन मूरति सुं
दर मूरति चित्र हि में चित लेत रहुरा
यें ॥ ८८ ॥ शाला दर्शने यथा कवित्त ॥ उम
गउछ्वाह उर आन कों ओप चित्र बात
री को चाउ बढ्यो तें जतनन वहीं ॥ मि
लि रस रंग रिद्धि सुंदर सकल सिद्धि
पाइन वों निद्धि जे निकाई और सभ हीं
में हूं सो उछरि गयो कुहर फटि गयो
नैन निको उदै भयो सूर आज वहीं ॥ नं
में जीव आयो मो सुख वे अंग अंग छायो
वह दरसन पायो सो हजहां जहूं को
जवहीं ॥ ८९ ॥ क वित्त ॥ पलक में पल
क लगावत न पके पल रहै ॥ पकट
कमानो कहूं ठगा ठगे है ॥ मृगा के से
नसें हें खंजन से चंचल जे खिले हूर

हैनैकहूनउगमगेहैं॥चितैरेचितैरे
किधौंसुंदरउकेरेकहिकाँपैनाहिके
रेचित्रसेप्रेमरसपगेहैं॥प्रेननेमैंनसूरति
सौसाहसनहासूरतिसौंमनकौमसूर
तिसौंपसैनैनलगेहैं॥७॥अथसंयोगसृंगार
लक्षन॥दोहा॥द्वैविधकोसृंगाररुहैके
हतसबैकविलोग॥प्रथमजानिसं
जोगकौवरनौवहुरवियोग॥८॥संयोग
सृंगारयथाकवित्त॥एकसमैमेंमलि
मैंरामनिसौंसामरमैंघेलतहैंमैंन
फेकैमैंनमरसतहैं॥एकनिकोभे
टिपकलैनिहूलपैटिघुनिपैक
निचपैटिकुचछोठपकरतहैं॥
छिरकैंगुलावसौंगुपालनगुपालके
निसुंदरसवहरूपछैमैंमरमतहैं॥मे
जानेफूलीफूलीललतलतानिपर

मंदवृंदनिसोंमेहवरसनहैं ॥२२॥ दोहा
घासेयोगसिंगारमेंउपजतहैंजेभाव
तिनकेलछनभेदसुनवरनोसक
लवनाव ॥२३॥ अथभाव दोहा ॥ संदस
रतिदषिसनिचितमेंउपजेचाउअव
टहोहिंदगभौंहतेंकहिपतहैपभाव
यथाकवित ॥ नाउंलियोयहैं ॥ तहांप
पानसाहसाजहां ॥ पानसाहसाहजहां
थगथ्रगतहांमेंनमोजसरसानीहैफे
रिकरीनारीनेकदांतसोंअथरदावि
तिरछेचितेकेफनिमुरिमुसकानी
है ॥ लागीभुअलिषनवामेंपगनअरू
ङासेंसूअनौटकीछविमोपैजातउ
वषानीहै ॥ अतिरसरीतिजानोवेकी
रतिकेरंजीतिवाकेचितप्रीतिरनवा
वनितेजानीहैं २५ अथसात्विकभाव

दोहा॥ स्वेद कंप नरभंग गात्र निसंले विव
रनिवनाव॥ रोमहर्ष अस्त्रु प्रलय आठो
सात्विक भाव॥ ८४॥ यथा कवित लोच
न सजल चल विचल वचन मुख वर
न जगल लेन कटु रत न टारे हैं॥ पीरी
परआई कहिसे दर कपोल निमे
कोप तिआयर जानो मुधा सों मुधारे
हैं॥ पसीना सो भीन निउ निरोम हरष
नलीन है कैरहो मन पग न बारे
हैं॥ न ही मे हूं गई हो आन हाथ आन
पात न नेहो कहे काक्रु वरनिहा
रे हैं॥ ८५॥ अथ हाव लछन॥ दोहा॥ यासे
योग सिंगार को करनी उपजै भाव
ते किलकिंचित आदि दे कहियत से
रह हाव॥ ८६॥ किलकिंचित विभ्रम ल
लित हेला लीला हाव विहृत आहि

भिनमदनतपनमैंमोगध्येवरनवनाव॥४९
मोटायनविछिनकहिउनीविवोक
विलास॥ विहैपजपहावसकीनेक
विनप्रकास॥ ५ ॥ अथकिलकिंचितहा
वलछन॥ दोहा॥ श्रीमस्रिमउहविकल
तापकहिंसापजहोइ॥ केपहसीपि
यननहिंतकीकिलकिंचिनकहिसा
इ॥ ६ ॥ यथासवैया॥ गोनोभयेदिनकेउ
भयेकहिंसदरनेहऊहूकोनवीना॥
षेलनकामकलोलमैंयाललनाको
सरूपललालषिलीनो॥ कोउजोअंग
दष्योतियकोनवपकहिवारसवैय
हकीनो॥ सोइरिसानिडरीपहरानिच
कीअकुलानिचितैहसिदीनो॥ ६ ॥ अथ
षविभ्रमहावलछन॥ दोहा॥ छिनमें
भूषनपहिरियेछिनमेंधरेंउतारि॥ छ

रसि
५८

51

नैमैंरसअनरसाछिनकविभ्रमयौंसु
निहारि ॥ ८३ ॥ यथाकवित्त ॥ छिनकमें
भूषनमेंगाइफेरिपहराइ ॥ छिनकमें
पहिरिउतारिकेधरतिहै ॥ छिनकमें
उठिकैउहांतेंजाइ ॥ उहांवैठिछिनक
मैंरसछिनरोसमेंभरतिहै ॥ कोउआ
आपतेंजोवोलैतौवरजिराषैऔरही
सौंवोलवरवातनिदरतिहै ॥ देषी
रीनवेलीवहसुंदरमहेलीमैंजा
वनगहेलीऐसेंनमासैकरतिहै ॥
८४ ॥ अथललितहावलछन ॥ दो
हा ॥ अलकभौंहचितवनवलति
हस्तुतिमृदुशकानि ॥ हाथपाइसुकु
मारअतिऐसेंललितवषानि ॥ ८५ ॥ य
थाकवित्त ॥ सुंदरहैंवैनभौंहकामकीक
मानैऐनषंजनसेनैनलषुऐसेजनहौंदीयेहैं

सौंने रसौंकी प्यार अतिवतीठनीस
कुमार वडे वडे चारु हार मननिके
हियेंहै ॥ वेसरिकी रहीजानि मोतनि
की थहराति ॥ मुरि मुसकानि काकूं
कौंवस कियें है ॥ विधाता सुधारे सुद्
सुधा ही सौं मेरे जानैं राधिका के सबै
अंग माधुरी ही लीये है ॥ ८४ ॥ हेला भा
व लछनं ॥ दोहा ॥ पिय के अंग लगी अ
पही उपजावत है काम ॥ करि मिलाप
षेला करे हेला या को नाम ॥ ८५ ॥ यथा
कवित्त ॥ सेज की सुमी पयार ईला लन
लगाइ पुनि अपही तें ॥ उपजाई लीनि
यतकाम है ॥ उरसौं लगाइ उर ऊरूप
रि ऊरू परिक हैं ॥ कछु कंपकहूं नेंस
कविराम है ॥ पियमुषतन कियों त्रु
वन कौं निज सुध वेसंदर सुधरोवि

पिसुयाकैसोयामैंहै ॥ सुरतिकेसमैं
पोंछहूकेपतिसंगारमैंमिलापमैंषेल
कैहैलायाकोनामहै ॥ ८८ ॥ लीलाल
लछन ॥ दोहा ॥ जौलौंपियआवैनहिंग
तौलौंसषिसोंहासुपतिकीविनवनि
चलनिकोस्वांगुकरैलीलासु ॥ ८९ ॥
यथाकवित्त ॥ स्यामदंग्रगलाइचोवा
केचुकीवनाइओढ्पीतपटस्याम
रूपकियोकान्हकी ॥ सुंदरमुकुट
मोरपंषनमालगरैंपहिरिकैकुं
डलउतारिवीरिकानकी ॥ मुरली
वजाइनैनतिरछेनचाइमुरिमुस
काइ ॥ सषिकौंसषाइसिषभानकी
आयभईहरिछविहिंआपनेयाकौं
ऐसेंलीलाकरैललितासोंललीवृ
षभानकी ॥ ९० ॥ हावलछनयथादोह

कछकुअंकुरकामकोतियतनउप
जोहै॥पियठेषैवोकेंडरैंह्वाबक
हतहैसो॥४९॥यथाकविता॥हमस
बअलीमिलिवैठीरंगरलीनिमैंडल
ही॥सहेलनिसोंषेलसेकरतहै॥इ
हीवकाहूबालवातनिमैंकह्योका
हूअैसीउरीसुंदरजैोकोउनउरत
है॥छोउकेविछोनारस्यौछौनाजो
उछरिपरिछातीछोहभरीहियेंपी
रनपरतहै॥हातोरहेषैअउसनेअ
नटैषैनाउलियेअैसैंकोइअोरकि
परतहै॥४९॥विहितहावलछन्नदे
हा॥पियमनीपतियकेहियेंवढ्त
जातअतिचाह॥पेरेहोतमनोरथनि
विहितकहतकविनाह॥४९॥यथा
सवैया॥कुंजनतेंकुजमिदीरसपुंजमें

म्
५३
63

गुंजनि डोलत भीर भई हैं ॥ पकवरीव
रमैं ठहरानि तिन ऐसी कछु रहट बल
ई हैं ॥ ऐहो कहा करि षेक हिं मंदरा जे
सी चली यह रीत न ई है ॥ काह्नि की वा
ल हमारें रहीं देषत आज हीं हुं गई का
फ भई है ॥ ५४ ॥ अथ क्रुट्टमितहाव ॥ दो
हा ॥ कुच पकरत अंक निभरत आनंद
सों अनषाव ॥ कै रहा हा नाहीं दई कह
न क्रुट्टमितहाव ॥ ५५ ॥ यथा कवित
अथर सों अथर लगावो मनि गाहेंगा
हे। षंडित अथर देषिय हे जीयपैं रंगी
मंदर कपोल निमैं चौ ॥ का पै रेलषील
षिमषी वह ऐसी है जबोली बालिकै
गी ॥ मिसठानि रतरकै गीतर की तनी
नि तकि दरकी कंचु की कें देषि सासरी
समै मैं गी ॥ या ते रामे रामडरों नि ह्री ८

ह्वैरहैंपाइपैंहाहाकरोव्हाडियेजि
ठानीआइपरेगी ॥ ४६ ॥ अथमदहावल
क्षन ॥ दोहा ॥ जोवनकेमदसोंमदकहि
तहैंपंडितलोगनिहारि ॥ ४७ ॥ यथासवै
या ॥ जोवनकेमदमातीहैडोलतिसुंद
रकाजरहैकोवनाये ॥ चूनरीकीविर
कीलिक्षवलीकेवसरियाचितलेत
चुराये वाढ्योयौवनगाढ्हे ॥ सहरिजे
हरीरीफिरैछविछायें ॥ नावतनैनव
लेनउआसै ॥ अरूठनिश्रोठैअनोटउ
ठायें ॥ ४८ ॥ यथासवैया ॥ अथयनपनह
लक्षनं ॥ दोहा ॥ वरीवारआवैनपियति
यनचिकेउकलाइ ॥ निदेनिजभागनि
सुयोतपनकहैकविराइ ॥ ४९ ॥ यथा
कवित्त ॥ दहहनिजोंदहतहैदेहकों
डकूलदेषिमूलसेनगानलागेपाफू

सं ५४

54

ललनकोगहनो॥सोयोंमेजसारसकुंरे
गसारवनसारसारहैंनेसरसानेअव
कह्योकहनो॥ध्रुवकसमानआपुसे
दरसपतरिषिलटकीहैंहरनीकोंक
ह्योनिवहनो॥आसमथैरेआलोकत
आयीरातहैगईपैंअजहूनआयोअली
आपनोलहनो॥२०॥अथमोग्धप्रलाव
लक्षने॥दोहा॥सरवतनाकीवातकोंक
हैंकछुजानाति॥मोग्धप्रहावतसोक
हापडितलेऊविचारि॥॥यथ्यासवैर
या॥सवलताफुनिकैसिहैंकैसेहेंनृप
कैहोहिंगेकौनसरूपथेरे॥जिनको
रनउआरिनसोकहिसदरपमनिमान
कमोतिफेरे॥पियप्रेमसोउपावकहैके
कहूंअपनीअषिआनिसोंदेषिपरे॥मन
मोहनमोसोंनवोलतहौमुशकात

कहा सुष मोनकों रैं ॥१०॥ अथ मोटाय
यन हाव लछन ॥ दोहा ॥ पिय की वातनि
कै चलैं तिय अनुराग क्रमाइ ॥ हाव
मोटायत कहैं नाहि महा कविराइ ॥
यथा सवैया ॥ आवत है रूप की पल
कैं फल कैं दृग बोलन है अलमाने ॥
ऐं द्विजभार उठै अनुराग सुसमेठति
है ननकौं करि हानें ॥ अंग अनंगतरं
ग फकोरत सुंदर औरन मासेन या
नें ॥ होत हैं प्यारि पियान वहीं यों वतें
जवजी कछु काफ की वातें ॥ ४ अथ
विछित हाव लछन ॥ दोहा ॥ पियसौं
रिस यातें पिया करै कछुन सिंगार
सखी मनाइ सिंगार ही पर विछित
प्रकार ॥ १०५ ॥ यथा सवैया ॥ काजर कों
नही तेल सुगंध सिंगार की साज सवी

सबलाईप्रीतममोंजियमेंरिसपावै
तिरादकेदृगभोंहबढाई॥कोउनवो
लिसकेआलिग्रीरनहाकविसंदरमें
मसुकाई॥आजमेंमाउमनाइतिहोरि
हेंरहरेकेमेवनाइ॥१०५॥अथविबो
कहावलछनं॥दोहा॥लालमनावेबा
लकोंलेभूखनपगयोकवालवापि
करमालमोंमारेयहे॥विबोक॥१०
यथासवैया॥आसुयरहरिभूख
नवोयेंपियाचितवसोहेहोहाक
रिजोरतहाथनवावतकोयेंले
हीभयेजवसंदरयोंमहफेरिति
यानयनामरमोंयो॥कपोलमेंके
जकलीकोदईकरदोउलेफल
कीमालमोंवोयो॥१०८॥अथवि
लासहावलछनम॥दोहा॥

वलनकैंचितवनकहूंधौंआवत
तिपास॥ देषीपियकीसेजसवसौंधा
सेजआवास॥१०९॥ मोरैंसुहमौंहनहग
नजोवनगर्वसुदासपुनिविहसै॥ मु
शकाइसुरियासौंकहतविलास॥११
यथाकवित्त॥ चितवतकितहूंतेंकि
तहूंकौंथलवेली॥ आलीनिसाईवला
तिचलीपतिपासकैं॥ वारवारसुस
काइकैंठैहीउठैरिसाइसषीनिकौं
वहकाइकैंपरिहासकौं॥ आईपिय
हिगयैंजोवनगरूरदेषिवैठिकैवि
छोनासेजसेदरआवासकौं॥ वैठीसै
हमोरीहगभौंहनिमरोरीकहौंजा
इनकरोरीजीवहूसौंवाविलासकौं॥११
अथविछुपहाववर्ननं॥ दोहा॥ थवर
भूषनवलविचलननकोकछुनसभा

र॥ अलबलीयोवनगर्हीपविछेपप्र
कार॥ यथाकवित्त॥ पकहाथ्यहूरीप
कयाइमेमसूरीलीकटीकेकीनसुरी
पीकैथीठरहीछाईहै॥ फेलिरयोक
जरामेभारतनगजरातिसंदरजरा
इनकेसाजविसराइहै॥ अलकेसभा
रिथ्रहै॥ औवकसयारिसवदेषतहै॥
नारिकहैनाउदरवाइहै॥ हाथीका
मोछेयाभईउलतहै॥ देयायहकहा
भयोमैयापसयानकवधाइहै॥ ११
इतिरूवसंपूर्णो॥ अथविप्रलंभसृ
गारलछनं॥ दोहा॥ विप्रलंभसिंगार
पुनिसंदरहिविपवषान॥ विछुरग
योपरदेशपियपकभेदयहजान॥ ४
हजोभेदयहैपियापीउवसंइकगाव
संदरउरतैलावतेहैनसकेइकठाव॥ ५

सवैया ॥ सुष मेज सुगंध सुधा कर सी
न सगी प सुहात नही ॥ सषियो कवि
राज कहे इनि भांत निके सैं विनाज
गजीव न जानति यो ॥ कव हूं विरहाग
नि में नवि कैं कव हूं दृग नीर में बोरि
दियो ॥ पिय के विछुरें हिंप रा इहूका
मलहार के हाथ कैलो हकियो ॥ ९
॥ श्लोक ॥ सोरसों सवारि वारि गुलाव मैं
भ्रोरा उरि सीतल वियार हूं सें वार वा
रव रिये ॥ वेनपरत छिनवेपकनेवे
दनते चंद्रमा ने बादर नी नैं बोरने
कुजारिये ॥ सेंदराउ सीरचीरहू जरेतें ह
नीपीरकमलकपूरकौ रिपकें ठौर
करिये ॥ इते मानि विरहागि उठी तन
मांफ लागि सो इहोत आगि जो ई आ
गे आनि यरिये ॥ १० ॥ बिठंमव नेन

रसे

५७

57

अन्यरससवैया॥ मूलसेफूलकलिंदि
कैंकूलऊफूलससूलभयोमरिवेः
कौंतनवपैयोहैवसंतकोसुंदरकेत
सोंअंतरकेपरिवेकी॥ अैसोवअोरदे
अजानअनेगाअवेभोकह्याइनकेअ
रिवेको॥ तूंकौंजनगावेजसोहरतेऊ
षजानतजोजियमेंजरिवेको॥ ९५॥ हो
ह्या॥ विलंभमेंह्योतहैदशोअवस्थाआ
नि॥ अभिलाषसमृतिगुनकथनचिंता
जउजानि॥ १९॥ फुनिउद्वेगप्रलापक
हिव्याधिवक्रनिउनमाददशौनिय
नेहेकविकहतयामैंकछुनसवाद
२॥ अथअभिलाषछुने॥ दोहा॥ पिय
केजियतियमिलनकोहोतजहैंहै अ
तिचाह सुंदरताकोकहतहैंअभि
लाषाहिकविनाहें॥ कवित्त॥ ः

कोहिंतेरेसाध्यकालसंदरनई ॥ को
ग्वालिवाकीचितवनीचालजियतें
नदरतिहैं ॥ कोहूवहआवेकहोकेसें
आवैअवहींतोंसूधेंहू ॥ नछातीपरओ
वरूथरतिहैं ॥ हाहाहसिकहिदेषिमा
निहैतोमानिहैनमानिहैतोजानिकि
हा ॥ सीयेकरतिहैं अहेरहोदईऐसी
अवकहोतभईगोनेंहूनगईलईकें
सेकपरतिहैं ॥ २२ ॥ अथस्मृतिलछनं
हावभावलावमतन ॥ तियकेरूपसिं
गार ॥ विछुरैंतेंजवसिमरिपैस्मृति
कोयहैप्रकार ॥ २३ ॥ यथासवैया ॥ अ
यरारसलेतनलजैहैं ॥ सेनेननवोंह
सी ॥ भौंहभईजववै ॥ रमिरंगअंयम
नरंगनिमैंननसनिसनिकुंजीयाज
ववै ॥ सुधिआवनसंदर ॥ ऐसीअने·

सं
५८

58

कम्हैतो वस्तु भाइ रहे है सपवै॥ उरमैं
ससिकै रसकै वसकै जलई समकै
कसकै अववै॥ २५॥ अथ गुनकथल
छनं॥ दोहा॥ विरह वीच तियगुनन
कौ करियै जहं वषान॥ ताही सौय
ह गुनकथन संदर कहत सुजान
२५॥ यथा कवित्त॥ कुंचन सैनन कौन
न कहूं चिताक तहीं सबै सषि आ
पनी हीतन की भुलाती हैं॥ ही गामै
नीमान कअनार दानो दामिनी॥ प
सबैर दजवैनैक सुरी सुसकाति है
सदर उसामै लत वाकी सुषवास कौ
सफूलछा हिमैं रपोति पास मउरी
ति है॥ रूप की उजारि छि न छिपातै
पकी जे मान री॥ थे सीव हय्यारी सवि
मारी कैसे जाति है॥ २६॥ अथ चिंतालछनं
दोहा

प्यारी को दरसन मिलन कौन भांति
करि होइ ॥ पिय सोच जिय मैं जयौ चि
ता कहि येसोइ ॥ ९७ ॥ सवैया ॥ केतो वि
चार विचारत जी मैं हजार निहौं उप
चार वनाऊं ॥ सुंदर जो इ मिलै सकै है
यह या चित चिंत हमारि मिटाऊं ॥ जे
सो तो भाग हमारो कहा है छवीली
कि छाति सो छाति लगाऊं ॥ मैं तुन
योषनि सों उन आषनि कैसें हू के
करि देषन पाऊं ॥ ९८ ॥ अथ वुडलाल
छने ॥ दोहा ॥ नतु अचेतन तें हो हो ती है
विरह व्यथा की पीर ॥ ता सों ज उसा क
हत हैं ॥ जे पंडित कवि धीर ॥ ९९ ॥ यथा
कवित्त ॥ जव तें न हों देषी लाल नव ते
विहाल वाल सवाल सहा न तन मा
न तनु ज्वाल जों जरत है ॥ अनल है षा

योकियैंअनलहींघाइआलीकाढि
नैकरीजेवातैंकालसोंकरतहैं।विथ
मैविनैरीकियैंसुंदरउकेरीहैकि
मनीरसोंभरीहै।किचरीओंभरतहैं
मोहनतिहारैनाउँनेकवैंकीपरति
है।याहीतैंमैरोमामोहिजीवैकोंपर
तैहै॥२॥अथउद्वेगलछन॥दोहा॥जा
कोंकामकलेसतैंसुंदरछुनसह
इ॥भलीबातनलागैबुरीसोउद्वेगकह
इ॥यथासवैया॥इकतोकलका
निकैरकहिसुंदरकोकिलकेछिन
रातिमैतैं॥पुनिग्राइरहैनिसिकोंदि
कैवैरवछावतहैसविषावक्रतै॥अ
वहौवहतातिहैवानकमानतैंनाव
तैहैमनमाकेसतैं॥नपमारिविसारे
हैमारसवैवनमारउसारतसारउतै॥

प्रलापलछनम॥ दोहा॥ विरहकामकी
पीरतैकहै॥ आनकीआन तासोंकहत
प्रलापतैंजेकविहैंसज्ञान॥२३॥यथाक
वित॥नाराइनमरुनीकीमांगहीकेमा
नीफलेचंद्रमासोमानोचंद्रमुषीको
वदनहैचंपककुसमनतुसोभाकोम
रनुहै॥विदरीदाडोनाकोदानोयह
देषिअनसंदरदिपतजानोदाराको
लेनहै॥मेनोअंगअंगनाकेआछहीं
विलोकतहोतनुकादेमोहिंमीडेमा
रतमदनुहै॥२४॥अथव्याधिलछने
दोहा॥संदरवदनमदनकीतातेउ
पजैपीर॥२५॥यथाकवित॥कुंदनसो
तनुवृषभानजूकीनंदनीकोचंपके
सोफूलपंचवानहीकोवानुसो॥समा
कोजाकोउपमानआनसंसारमेंसो

सं ५८.

60

भासखसंपतिकोसुंदरनियातुसो ॥
राजतहैउरपरपयोधरजुगलयो
सोनेहैतेनीकोअतिसुमेरकोसातु
सो॥सोईनैचैनिशदिनकलनुकलनु
कलनपरतहिछिनुसूकिभयोपिय
विनपीरोपीरोपातुसो॥१४॥अथस्मा
दलछनं॥दोहा॥मिलवेवीइछुनीक
रेवनैनमिलनसवाद॥विकलहोइ
यामापनैसोकहियेउनमाद॥१५॥य
थाकविता॥उमडीउमडीवेलेकाहू
कीनराहीरहेजोईजानेसोइकेहै॥
श्रेसीविफुरतिहैहुगईहैपीरीपानी
पानकेनेहातनीरीछिनकैमेरीरछि
नअगिसोचरतिहै॥यकोसीछकी
सीनकीजकरीसीपकरीमोसुंदराय
रातियोरनयरतिहैजाछिनतेछ

वीलेकेतीछिनईछिनदेषेताछिनतैं
छीदकेसेछेदनिकरतिहैं॥२५॥ इति
विप्रलंभसृंगाररसमानं॥ अथवेषाव
नैने॥ यथाकवित्त कैसीथरेरहतकै
घाईमाई॥ निठुराईजानौकहूंजान
निनप्यारीवेशवितयेआवतअवेंभो
यहूसंदराइतीक॥ ऐसीकामकीकहू
तैयानैवानैसीषीकितये॥ कैसेहैंसि
यानेकाहूनैकहूं॥ नजानेकैसीवैठीर
हीआलीआसपासऊतउनये। तोरऊन
मोरेटगाकोरनिकीओरनिसैंदेषहै
ऊचोरजेसैंचोरावोरीचितये॥२६॥अस
वा॥ पहिलैंहोंगईनीकीवातनिला
गाइलईमेंहूंजानीभलीभईआजव
नलातहैं॥ सेदरमैंहसिकेचलाईरस
कथाकछूहसिहसिरीकिरीकिउ

रीमुशकातिहै॥ औसेमेंतिहारोनाम
लियोजवहीमैनव औरैरीगऔरैरी
तिऔरभईभांतिहै॥ देषतहीमोहूभ
रैनैनातिरछोहै॥ वेतोगईफिरभोहै
जोकुमानफिरजातिहै॥ ५॥ सवैया॥ का
मकथामेंकहीकिननीपुनिकानकि
योनकहूंउनिसोंहै॥ मोनैनजानपकेहै
योकहावरूपानगुमानकिरोसरूठो
है॥ लीजिनानमतिहारोजेवैनवसैट
रेवमुनिवेटनियोहै॥ मोरतिनारि
विदारनिउठमजोरतिनैनमरोर
निभोहै॥ ६॥ पद्याकविन॥ वानकैसी
वनिकैअवानकहो॥ आइकरिहाई
भाइचाइनिकैबितचोरिलेगई
श्रवरपरम्हगामदकीतरेगआ
वैसेगऔगदैधैसयिसे ::|:

दरसै वेगई ॥ निरखें चितैकै नैननती
रसै चलाइ नारि लटकाइ घुंघट नि
वेइ नेकनेगई ॥ वली मुरी मुसकाइ
संचलकछुइ लाइ छतियां दिषाइ
केदछतियामैं कैगई ॥ ४४ ॥ पद्मासवै
या ॥ सोहन सुंदर रंग भरे हैं कियौं क
हैं रूप सुधा सौं सुधारे ॥ चंचल हैं जब
लैं न हलैं न हला हल षाये सेआलस
भारे ॥ हूं मतवारी लेरसी लेछबीले रं-
गीले कियौं मद सौं मतवारे ॥ सोवी क
हो इन आंषनि आजकियौं कऊं का
जकुमार निहारे ॥ ४५ ॥ अमसब सवैया
देषिजहांवह मोहनि सूरति हूरतें दे
रतहैं रसा ढ्ढाने ॥ आपहि जाइ स्यु आगा
उतिलै उर अंतरपो ॥ अदुनाइ तथानै
मोहहैं सुंदरको हर कैसमुफावै ओ

स्ने
८२
62

दोऊकौंवैकरिजोनै॥मोहिकहासि
षदेतसषीदिषियेअषियेंसिषिये
हनमोनै॥षष॥नैंदनैंदनठाढेहैंद्वार
भएकहिसंदरमोहिरमैंथसिकै॥नि
कसीहषभानललीजअलीनिमिली
हगलीमैंचलीहसिकै॥नवनैंहरिकै
हगनारनिमेंफिरघेरायकोहूपर
हाकसिकै॥मानोराछोंहूसोनेको
रंगअनेंगसुनारकसोटनिमेंच
सिकै॥षप॥कविन॥निसदिनवेहूप्या
नवाहीकोकथावषानवेंयेंहूजिय
हानकेंहूप्यारीवहूदरमें॥अकलविल
कलमेंतुलालनकोंपलपलमेंदरमें
जलविनमीनछीननरमैं॥बालकेंबि
लोकेंबिनुवालमकोविरहयोंजमें॥
कुहेलनवीवीचदियादानसरमें॥

छिनहोसुदिनभयोदिनहोसुपाषभ
योपाषहोसुमासभयोमासहोसुव
रसैं॥ ५४॥ सवैया॥ आवनओंमथुरातें
सुनेहरिगेहहूनितैंनियदोरिकरी
सी॥ लाजकोछाडिओंडोरिकेटूटत
मूठतेंछूटिचलीचकरीसी॥ देषतिबा
मधुसूरानिकेकहिसुंदरसैंयांहियेमें
पकरीसी॥ हलीनचलीनटगीसीसवै
तिछकीसिथकीसिजरीजकरीसी॥ ५५
कवित्त॥ औंडाईजेभाईनवनवहीतें
आईसुंदरवैठारियोनषाइवातेंबो
लतिषगतिहैं॥ पावकेसरातेंनेवया
वकेसोद्रुयोपरैंहाहूनतेंदेख्योदह
हूनोकरगतिहैं॥ अलीनिकेसाथ
केजगलिनीमेंललीगाईकलीसी
मिलीनचलीहलीनजगतिहैं॥ विते

निमैंकियेंमूठिगहें ॥ चकनीठिनी-
ठिकाङ्कवीताउ़ीठिमाईड़ीठिमोल
गतिहैं ॥ ध ॥ काहूकोउगावतिहैं हम
हैं भ्रगावतिहैं ॥ कानकहगावतिहै
कूठीम्रहैं ॥ घातिहैं लियोहै बुराईवि
वसाहजहा झूलहूकोसेतायहवात
सवनीकीजानीजानीहै ॥ देषीनेंहींश्रा
पडीठिलालनकेहैरफेरतियनिमें
नेहीपरश्राहृण्यहगानिहैं ॥ मत्रकीक
ठोरीजेसेवलीचलीमेलतिहैं ॥ चौ
गेहीकीठोरमेलैश्राईठहरानिहैं ॥
धर्स ॥ भावतनपीपानश्राकुलव्याकु
लप्रानगरभकेजेनिदानतेसेवड
कावैनेकहेगाघाहैं ॥ जिठानीसैंसास
ननगाईड़ीठितहीकिधेंननिकेप
लकयुकावैने ॥ झूठोवीवपहिलैंठीपाल

कों विलोकि आली पूछी उठि ऐसे हो
न है मैं होत हैं उकानैनै ॥ उठी सतराउ
छ बिसंदर कहीन जाइ कुंकी कुह
राइ वोल वोलै हैं कुकावैनै ॥ ५ ॥ पा
री जो मों सो आई उठी मोहन मनाइ व
लो षेल कों बनाई ॥ कैसी कुंजन की
पगली मानो मनोहारि देषि जिय
मैं बिचारि हमसैं दरब नहरनारिना
गरी महा भली ॥ रहे जउ सौं ईहम
गैवारि है पै सैं कहिकाऊ जू सो हू
छ जो रिपा लागनु कैं चली छवीली
कों यहै छबि निरषि छबीली कै छैल
छ किहौं सौंर होर हौ वकी मीसै
ग्रलः ॥ ६ ॥ माइ केन मा इ विनवाहु
रै दियो मैं याइ सासहरे मासह को सा
समा कि वसियत है ॥ देवर के कान

सं
६४

64

भ्रुनिनेवरकीपरेंजिनचोरकीसीन्या
ईनौग्रटातैंयसियतहै॥ देषवेकीहै
सनिपरोसनिसदारहै॥ निवोतनहै
वोलगैरहीमेंकसियतहै॥ सदरक
हैकोकाकूकासोपहचानजानका
काकीसोकहाजानोकेसैंहसियत
हैं॥ ५४॥ सोरसलेचलीमिलीग्रालीनि
मेंग्वालिपकग्राईचेरिरहीवीविवाद
मेंविहारीहैं॥ सोगातजमातकहैसद
रसिसात॥ ग्रनिरूढिमईजानिसरा
निदेनिगारीहै॥ ग्रागैग्राईसवी
सवश्रकेलीरहीहैजवप्यारेक
हैजाऊतववोलीहसिप्यारीहै॥
जारेवेरई ग्राबैंजिनदेहोभावै
ग्रोरश्रुतिकीजेकहाजीकेजीय
जगमैंजिवारीहै॥ ५५॥ यथा

सवैया। आलीनिकेसंगचलीमिलिकैं
जगलीमेंकलीनिकोंहाथउचायो॥
हसीसषिसोंजबआपउहांहरिहेत
समेंदरसोप्रुचपायो॥कहांलोंहुं
हैंरीकाऊहोंदषिमेंनामाइनाहि
नकाहूजनायो॥कहांहुंहोंसोपज
रकूपदानदईदईदेषिउहांहसिआ
यो॥५५॥अथकेशवर्नन।यथाकवि
न॥ओरनोसिंगारसबपेरहोका
ऊवाकेमेचकनछविकहिपैये
कचोकहीं॥सदाकहूनसुकुमार
केसेवारसमभूलेमषतूलहूकेन
लउपमाकहीं॥इनेमानचेउवारपा
ईपारियतनजवतीसेरसुकामयमें
केसटीपरटहगाइपीछेंपऊवनआ
इकैंांहूकैंांहूलोंकहीं॥५५॥अथनान

सं
६५

6 65

वर्नेने॥ सवैया॥ वैठिअकाबनषा
नोकहाउपमानन कोतिहूलोक
मैनाही॥ षोलेहैं भूषन छोरिहैवे
नीउतारीयरीअंगियाउतहोंही॥ पी
नपयोधरउपरसेंदरआपहीं॥ ना
रिनिवारेकेचौंही॥ स्यामनायोक्र
वअंग्रिनिमानोपरीहगतारिनकी
परछांहीं॥ अथवरुनीबनिनेयथा
सवैया॥ आंषिनआगेविराजतसुं
दरमोरपषावनिकीछविछायें॥
कारिमहाछबगकारिअमारिविहा
रितिहारिहैं सामुहें आयें॥ यौतरु
नीकीवनीवरुनीपढ़ैवाहिनवे
दजोंहाथउचायें॥ जुवकोटदिहैले
नमनोमनमोहनके मनकोउकसायें
अमाअम॥ भौंहेंकामानमीवानसेंननकच

छकदारिकोरूपयोंपायोराषेरलेटि
नगारेपंथ्योयरसुंदरनेगमोंहाथउ
ठायो॥वैसरनेनाहैंनाकभुजाभुषव
दकेहाथनिसानगह्यो॥कामनिके
ननमछमानाकविकामकिकोरका
साजवयो॥परदेशतेसुंदरप्रीतमआ
योऊलासविलासवढ्योमिगरे॥उरके
ठलगायलईललनागहिगाढ्वआवे
दसोंअ॥करभरेनरकोहेतनीदरकी
दरकी॥अंगियामेनिमालतेटटिकेला
लपरे॥मनोपीकेमिलेंतियकेहियेते
अंगरा विरहागनिकेनिकरे॥५८॥अ
थरोमावलिवर्नने॥दोहा॥काकनहीं
वृषभानसुताकिअवानकहीअवरा
किकिनारी॥देखिरोमावलिरूपकीरा
शिरहेमनहीमनरी॥किमशारीरार

सु॰
९९

66

वैवैरतैंसंकरकौंकहिसुंदरैश्रसीश्र
नेगविचारी॥ईशकेतीस्वरेनेंनमेंदेन
कौमानोझमेंनसलाकसवारी॥९१॥श्र
घश्रलकवर्नेनै॥यथासवैया॥माना
भुजंगनिकेजचबच्चाशुवेडुपरपक
रहीश्रलकेसी॥कारीमहासटकारि
हैंसुदरभीजरहिमिलिसोंयनिहे
सों॥लटकीलटवालटकोठिगऊर
गईवहिकेछुविश्राननकीओ॥श्र
कवडेदियेहजिविकारिकेहा॥या
कननदूपेयननेसुहरेओ॥९२॥श्रथ
नीवीवननेन॥कवित्त॥चापिविकुटीसों
हूनिनाभिकेनिकटनीकीनवेलीकी
नीवीछुविकेटकथरतिहै॥बांधीक
सिडोरीगाषीराषीकीसीफूंदीथोरी
सुंदरगुलाबकीसीकलीसीरहतिहै

ढाढीवालआलीसोंकहनवातहसि
हसितकेसैंनमासैजेमैचुतुरीकरति
है॥हूकरेउकसिआवेहांकेरठवकि
जोवेहसिपरैओवकाइचौंकीसीष
रतिहै॥८३॥अथवाणीवर्नने सवैया
.... फरैसुघैतेसुसकात...
..... अछरउचरियेंकदि......
... सवादसनैतैसयामनीआनमि
मैंभरियें॥जितनोजकवितकहाके
हिकैमनमैंधरियें॥कनिवातकहे
सलागनयोंकरिवोइकरोसनिवो
करियें॥८४॥अथसत्रकवितयेमत
अलोपहुकेरहोतीनलोकनिमें
काहूनसवादजामोकहानीयोंक
हीहै॥संदरअयरनीचेरहैं॥लनाइ
करिमैमायुरीनऔसीउहडहीहै॥मि

सरीतेजाकेआगेंदोदोतितितिमि
कागहैासमानकौंउपमानआन
कहैंलहीहैं॥तेरीयाहीबानीकी
मिठाईसुनिदेषियेंतौमीठीमीठ
सौजसवअ्रसौहैकेरहीहै॥४४॥क
वित॥आजलषीललनापहुवेकौं
कहुतहैहै॥तमहाअनुरागीबा
रिकतोयहिलैसुनिलेतहैं॥सुदर
बालगुहुपैसुभागी।अछूरवैअउ
तैसुहुतेउचरेंफिरिबानिमहारस
पागी॥सोहुतयोंसुपछावनऔरकौं
आपहीमानोपछावनलागी॥४५॥
रहीपनयथासवैया॥साफसमैकोय
छाहदिशाकोरछोअसोऔसीलताईनि
हारी॥चंदनकोनगुलालकिलेकुहूना
इनितोपलहैकिविसारी॥रानतहाछि॰
चेदकलाकवि

सुंदरसोंछविछेसीनिहारी॥मैंनम
नोगाढ़लैलोलगिलोलनिषलकोंछो
लिगिलोलिसवारी॥९४॥फूलिकमोद
निमोदमेंवेदविनोदसोंसुंदरनारहूं
सोंहूं।केतिकेहारथेनेचनसारवनी
सुषसोंजसुंहगयतिसोंहूं॥रापिकामा
धवजूजसुनातटपेजगजोहूमेंजो
हूमेंजोंहूं।जाननतहों।अनुमानरमा
मगहोंहिगेछीरसमुद्रमेंयोंहूं॥९५
दोहा॥सुरवानीयातेंकरीनरवानीमें
ल्याइ॥जेमेंमगरसरीनिकोंसवहींपै
समुझाइ॥९६॥यहसुंदरसिंगारकी
पोथीरचीविचारि॥भूल्योहोइकहूंक
हूंकविकुललेउसुधारि॥९७॥लिषी
भूपजयसिंहकीपोथीअनिहितला
इ॥प्रजारामनितभनतयहश्रीरघुना

सुं
६८

पसुहाइ ॥७०॥ बीसोसंवतसैलसुरा
वससतसिवाकतिवार ॥ माधवसु
दितिरिजातिथीपाठककोसुभ
कार ॥७१॥ इति श्रीकविराजसुंदर
कृतेसुंदरसिंगारसमाप्तः ॥ सुभं

ओंश्रीगणेशायनमः अथरागमंजरीलि
ख्यते ॥ रागविलावल ॥ आज्ञमहामंगल
कोशलराज्ञीन्हकेसुतचारिभये
सदनसदनसोहिलासुहावननभअ-
रुनगरनिशानबजये ॥ सजिसजियानअ-
मरकिन्नरमुनिजातिसमयसुभगानट-
ये ॥ नाचहिंनभअपसरामुदितमनपुनि
पुनिवर्षहिंसुमनचये ॥ ॥ अतिसुखवेव-
गिबोलिगुरुभूसुरभूपतिभीतरभव-
नगये ॥ जातिकर्मकरिकनकवसनम-
णिभूषितसुरभिसमूहदये ॥ दलगोच
नफलफूलदूवदधियुवतिनभरिभ
रिथारलये ॥ गावतिचलेभीरभईवीथि
नवंदिनबाकुरविरदवये ॥ ॥ मायाउर
रमिजगामसवदाहि ॥ चारमासकाढमण
भाई ॥ भूमिविचारीभा ॥ ॥

रणविलोहैं॥चारुनयननैनेकभरयो
है॥अगमअगोचरलीलाधारी॥सोरा
धापतिकुंजविहारी॥अबमैंलीलाअ
नलभूयाछ्या॥पांचतत्वमिलजगतउ
पाया॥चरचालोकरहैंअतिपाला चौ
धाभुवनपलकसेंटालाकाउरैरजा
कोडरभारी॥सोउखलबांधेजेमह
तारी॥बडभागीकहियेब्रजवासीजा
केसंगरहेअविनासी॥जोरसब्रह्मा
दिकनहिपायो॥सोरसगोकुलगली
वहायो॥सूरदासगुणकाहिवखाने
गोविंदकीगतगोविंदजाने॥रागवि
लासमें॥लालमोरीवेसरीउरकग
ई॥निनकुंआरेलगरवांकरकारे
वेलनलागीनिडरटह्योह्रगरवा
ई॥संगकीलीकनिआंसभनिरखवि

रा मं २

2

रविहाम्रुखकागई ॥ समसरकस
रकश्रवंवग्रीमोरीम्रुरकगई ॥ मो
नै ॥ अयमानलेहूमरेजिआकीवा
त ॥ मध्आविलावागरेजेलगावी-
मीरीतोअंगंआ ॥ नरकनातवेनती
करतसे ॥ अरजसहनलेसेगकीलग
नी ॥ ओंहूसमुसकानजानमेमदसा
हूसदारगीलेपिइहूकेसीनिसवी
ननात ॥ राग ॥ ओंखिनभरीओंनीदरि
ओंमेंनीदरिओं ॥ केसेकजागोनोरे
सेगपिआरवा ॥ सगारीइनमोहेजार
फनवीती ॥ मेहूरवानअवहूवरभरे
लोपलछिनवरीओंनीदरीओंमेंनी
दरीओं ॥ रागकानडा ॥ केसेभरोदि
नरेनअंधेरीरी ॥ नीदउचटगईला
लविनमोरीरी ॥ उमडघुमडघनव

रसनलाशोरी ॥ रिनफेरीपिआमेह
रकिऊंनफेरीरी ॥ मनमोहननंदके
नैदनंददेषीहूनैराकहूंऐसीरीतप्रीत
नेरीरी ॥ विरहाकटकभरहृदनचोरी
री ॥ रागसारंग ॥ गुरुविनऐसीकोनक
रे ॥ मालातिलकमनोहरवानालेसिर
छत्रधरै ॥ भवसागरतेबूडतराषैदीप
कहाथधरै ॥ सूरदासगुरुऐसीसम
रथछिनमैलेउधरै ॥ सिरीराग ॥ ह
रिहरिसंकरनमोनमो ॥ कुकणामय
नैननमोनमो ॥ अहिसाईअहिअंगवि
भूषनअमितदानववलविषहारी
नीलकंठवरनीलकलेवरप्रेमपर
सपरहृतहारी ॥ चंद्रचूडसिषचंद
सिरोरुहयमुनाप्रियगंगाधारी ॥ सु
रभिरेनतनभसमविभूषनहृषवा

रूनवनवछचारी॥ अजअनीतअवगु
हिथेकरसयहै॥ अपिकेअवतारी॥
सूरदाससमनामरूपगुनअंतरअ
नुचरअनुसारी॥ विलावल॥ हरिह
रिहरिहरिसुमरनकरौ॥ हरिचरना
रविंदउरधरौ॥ हरिचरननिसुकेद
वसिरनाई॥ राजासैवोल्योजाभाई॥
रागवजेमाराजतपकथनी॥ विद
रावनमिथ्यनममीहरन॥ सकल
मदरमनी॥ कनकांविभपरकमर
गजनमानोचफतफनीविद्रुमअध
रदशनउनदामनम्टडकोकलव
वनी॥ अध्याअपादकेचनकीसदरह
टनकटकनतनी॥ दयसतकोसत
नासतनकीसतनतो॥ सतवपवदनी
मेंवसतासतनतासतननासा॥ नापरज

लजमनी॥तिमरिद्रुमहतथ्राताषिक
वाहनताइरकटजुवनी॥सूरस्याम
छवनिरषडुहनकीवाकृतप्रीतव
नी॥रागविलावल॥आजआनेदसोरा
षिकावोले॥नीलपटओढनीकनक
मुझवनीहाथलियेआरसीरूपको
तोले॥आजकनककोकेकणा॥पोरष
कनावनेमोगमोतियनकोहाररहम
ले॥आजकहतलछिरामपेसीनवल
नागरवनीकुसमकेफीलकीगोद
कोवोले॥आजआनेदसोरायकावो
ले॥रागसोरठा॥ओवेहारडफवीजन
लागेरीमाईरीव्रजमोकोनउपाई॥व
हारडफवाजनलागेरीपानीभेजी।
श्यामसुंदरनेमोपपडीनजाई॥मो
रेप्रीतमकोयोंजाकहियातमविद्रु

कछुन सुहाई ॥ बरसन कों आई घटा का
री । सूप सी घुंदारी भारी प्यारी वाई बिज
री की उज्यारी जिय प्राउरै ॥ गगन की उ
रज सुन तल रजत हि आउमड उमड
घिर घिर कुक कुआई ॥ चहुं ओर नव
द वकोरे पीरे चीरे से गम्पाई ॥ मोर वा
बोलि छोटी फूंदन की लटा ॥ बरसन
कों आई घटा ॥ राग ॥ कैसे कर मन सु
म्हाउरी पिया विन हि श्री रामन हु
पोई आवे ॥ निशनो श्रे ये आरी कारी
बिज्जरी उरावे यह रूप पावसना भावे ॥
सुय तुय बिसराई तन मन की
बिरहिहो बिकल भेरे आनसताव
त पनकी सुन सामगे सन्मुनी
मोहन आन मिलावे ॥ राग॰
बिलावल ॥ ∴ ∴

अरटेउ री मेरो वाल गोविंदा करय
लवगाहि गाहि दिष राचन खेलन कैं
मागे चंदा ॥ भाजन मैं जल थारि जसो
मति इहि विय चंद दिखोवै ॥ रुदन
करत फ्रफ्रतन नही पावन चंद यरन
केसैं आवै ॥ मधु मेवा पकवान मिठा
ई ॥ मांग लेहो मेरो छैोना ॥ चकई फूल
पात के लटकन लेहो मेरे लाल खि
लौना ॥ संत उवार असुर संघारन
दूर करन दुख वेंदा ॥ सूरदास वल
गई जसोमति ॥ उपजिउ के सनि कें
दा ॥ राग सोरठा ॥ वहोरउ फवाजन
लागरी ॥ व्रजमैं कीनो कौन उपाइरी
सषा वुलाई लई व्रजनारी ॥ सूनो वा
नइक आइरी ॥ सव गोपियन को ज्ञा
ग पठावो ॥ अंग विभूत रमाइरी ॥ अ

रा० म ५

5

नगनभेषबनावतगोपी॥ अपने
अपनेचाओरी॥ चंदनफूलपानोके
दोउनेलेचलीसभामिलधारी॥ फर
कतभुजादूरसेंदेषीचढीअटापर
नाइरी॥ मेंदेषीआवतस्यामसोंवरोष
लोफागबनाइरी॥ पातीपठ्हावीस्या
मसुंदरनेंपडतपठतमुसकाइरी
विथनालिखीहैमागतिहारी॥ हू
मेरोदासकहारी॥ मागविहागउ
खिजननैनरूपरसमाते॥ अतिही
चपलचौकायलपकलपिंजरा
नसमाते॥ चलिचलिजाततिकट
श्रवननिकेउलटिफिरतताटंकपें
दाते॥ सूरदासअंजनगुणअटके
नातरवैहैउडनाते॥ खिजननैनन
रूपरसमाते॥ रोकेमेरीगोलबीमेंके

सेभरेपानीआ॥मोरमुकुटऊंचनको
फलकैमकरमनोहरऊंडलहलकै
भालतिलककेसरकोराजै॥औरवे
जेनीमालविराजै॥पीनेवरकटाकि
शोरीचैनम्या॥१॥अयरमयारसवेन
वनावै॥गवालवाललीयेसंगआवै
कहोनमानेनेदमहरकोमाखन
खान॥फिरतघरघरकोअंसोरीनि
उरकरगहीमोरीवैनिआ॥२॥अति
किंकिनिआनूपुरराजैरुनझुना
ठवऊमुनीमराजै॥पगपैजनिया
पायलबाजै॥दरसदेखअघहरते
भाजै॥अनसेदरअलवैलीचितव
निया॥३॥मदकीछीनरमोमनहूट
को॥वरनतकाहेनाजसोमहरनि
आ॥४॥सोकन॥४॥रागा॥विहूरतवाग

वामैदेषेऊलमानवा॥मकराकृतव
नमालविराजै॥भ्रगुपनकेटग्रनछ
विछाजै॥गोरस्यामतनंसुदरराजैश्र
गश्रगकोटिछविछाजै॥मउरवच
नकरलीव्रयनकवानवा॥५॥वैसकी
उनिकरीरषवारी॥उजरनैनकवल
जलकारी॥वरनकमलरजलागती
प्यारी॥विधिसंकरउनहीकोयेरया
न॥वापीतेमरग्रभकटभरकाहेका
गपछसिरगुसपनसोहै॥रामल
षनजगनिरषतमोहै॥छविसिंगा
रलष्यारीमानोआनवा॥६॥कुसास
षीसोपासोग्रसवानीग्रषिललोक
पतिजीवनजानी॥उपमालोकलो
कानहीचरामोनारी॥सीलावरनर
जमगमादरसनकरोरी॥चलोतजि

मानवाध॥राग॥समनसमेनवामकर
दीना॥सावरऊवरसषिमठीलोनाहे
घरूपसवभेसघारीहलसीसुदिनथे
देहऊमारी॥वङहरिगैवलीदेवीकेभ
रनवा॥रागसोरठा॥अहोउफवाज
नलागेहेली॥चलहोचलहोजाईएन
सोजहोषेलतस्यामसहेली॥जहांच
नसेदरसावरो॥नहिमिसदेषनदाओ
पडरजनवैरीभयेकोजेकोनउपाओ
आवोवङ्करामेलियेसोवनकोदेहवि
आर॥वेदेहहमकोपद्देदेषरूपनि
हार॥जलज्ञतगागरऊरियेजमुनाज
लकेकाज॥इहिमिसवाहूरनिकसेक
जाइमिलेब्रजराज॥रागरंगउमगोर
हे॥आनंदराइदरवार॥गावतसकल
गवारनीनाचतसकलगवार॥चरी

वरीआनंदकरिजीवनजानिशसार
गाइखेलहूसिलीजियेफागवमासे
हार ॥ मुरलीमुकुटविराजईकौटिपट
राजतपीत ॥ सूरजप्रभुआनंदभरेउ
गावतहोरीगीत ॥ ओहोडुफवाजनला
गेहेली ॥ रागकाफी ॥ वृंदावनकीकुंज
स्यामसरसखेलतहोरी ॥ ससिवदनह
षभाननंदनीकेचनहंनेगोरी ॥ पल
रेलेनरहेलडम्याविछुरतनाहिवि
छोरी ॥ रकअवलाडोवलावहूविय
पकचनरओभारी ॥ इकसरताआ[illegible]
मानमाननीआवतिनिपटतिहोरी
हमउरकरानपियाअपनेकोसास
ननंदकीचोरी ॥ अवननिमनकपरी
मुरलीकीनिकसतहोरीहोरी ॥ गआनव
लसवसंगसषालियेश्रीवृषभानकिसोरी

सूरदास प्रभु तुम मेरे मिलन कों जग
अवचल यह तो री ॥ वृंदावन की कुंज
स्याम रस खेलत होरी ॥ राग नट हरि
संग खेलन फाग चली ॥ चोवा चंदन
अगर अरगजा छिरकत रंग रली ॥ रा
ती पीरी अंगिया पहिरे अरु तन कुसु
कसारी ॥ सखि ने बोलि लै नैन भरि काज
र देन भावती गारी ॥ रिव बसन रिव
नायक आगम जोवन भार भरी ॥ देखि
रूप मदन मोहन को नंद के द्वारे खे
री ॥ कहि न जाइ गोकुल की महिमा
घर घर बीथिन माहीं ॥ सूरदास सों
कैसे बरने यह सुख तिहिपुर नाहीं
हरि संग खेलन फाग चली ॥ राग का
फी ॥ मन हर लीनो नंद ढोटा ॥ निर
खत सुंदर अंग सलोना ॥ ऐसी छवि क

भूमइनहोना॥कूलरहेनाग्रुनातट
भौना॥देषेजोवारसाकरीनैनावो
ललननहीरहनवहमौना॥दषिप
यछीनषातद्वैदोना॥चरघरमाष
नैघोरतचौना॥वादनिचाटनिलेत
हैसोना॥षेलनफागगुलालसंकौ
ना॥भ्रलीवनाइविसारैभौना॥मोदे
षतश्रवहिकियेगौना॥नटवरश्रेग
सवासेजसजौना॥सूरनंदसुतम
दनलजौना॥रागसोरठ॥सषीरी
वहदेषोरथजात॥कमलनैनकौ
येपरओरपीतांवरफहरात॥जवलौं
जातओटश्रेगिनकेवचनरहतकुश
गात॥छिनिपरकंपकनककदलीक
हैमानोपवनविहात॥सूरसरूपनीरद
रसनविनमनौमीनजलजात॥विहागरो

भीरभईमुखदेखलजाने॥रतिकेकें
लिपेलखखसीचतसीभनअरुनैने
नअलसानें॥काजरेखवनीअपरन
परैनेनकपोलपीकलपटाने॥मनो
कंजदुपरबैठअलिउनसकेमरकें
दलभाने॥येहियहारअलेक्रुतविन
गनआयेरतिरनजीनसयाने॥सूरदा
सअभुपाउथारियजानतिहेंयरहा
थविकाने॥आजआनंदसोंराधिकाबो
लेनीलपटगेहनीकनकसुहावनी
हाथलियेंआरसीरूपकोंताले॥आज
आनंदसोंराधिकाबोले॥कनककोकं
कणऔरमुकतावनेंमागमोतियन
कोहारहेमले॥आजकहतलछीरा
मपेसीनवलनागरवनीहरुसके
शीलकीगांठकोखोले॥आजआनंद

सोंराधिकावोले ॥ रागवलाउेलऊ
ऊभ ॥ राग ॥ छवसखरेरीछवसखा
रे ॥ आलीरीहषभानकीडुलारी ॥ छवि
सखारेरीछवसखारे ॥ वाटवाटरोक
तरमेलतहेनैनादेतअंजनकारे
लछनदासमशोचशोचलिवकलि
वकगेंदउछारे ॥ छवसखारेरीछव
सखारे ॥ अवरअवरनवसतनभास
तभूषनअंगसभखारे ॥ रागवलाउ
लकवित ॥ तुमजकाहतरीवतिओ
वनाइरसकीरसकलालमोउ ह
मजानतपहिचानतमाननतनहि
कुमनभांतकीनिपटयुआर ॥ नम
जोकहतवतिआवनोहै ॥ मधुर
मधुरतानानवनविसरनकी ॥ विव
करयुगलकरनदफराफ्र ॥

घुंघुरे आली अलक पलक टेढ़ी चित
मन निसं दिन करता हिरत रारसें द
रव्रजनार॥ गोरस मांगत दान सहू
खिन मातन नानवेंग नितता॥ चुगाइका
ह्रि कछु गावाइजव हीपकरत स्रुव
ओही वह गुजार कामनातिये मव
वचन कहत चाहत मानी हार। केउ
लकों लकपोल विराजत छ्याम वरत
सेंदर छबछाजत निरत करत चप
लत। अत थई थई गुगाथाई लीकट
त्रगम पद निसे लछन दाम अनव
रण कमल वल हार॥ कवित्त॥ चलो
हरि वगाऊं लाई गाये॥ जोपम विल
मकरो मेरी॥ सजनी तो हृषभान ऊहा
ई॥ चली हरी वेगाऊं लाई॥ सुक पिकर
गके हरगाज विदुम हरपैं जाइ सुकारे

री॥ऊमुदककपोतकवलकदलीस
वैतेपरखवपारे॥चलोहरीवेगऊला
ई॥कनकसुखंगकिंवशशिखासत
तैंजसहनहरलीनो॥चलउनरदेत
जगलूटे॥ताकोनछापकरलीनो
चलीहरीवेगऊलाई॥विंवसुपास
कनाखरविजनछवसोरमगालउरा
नै॥सूरदासहरिकोयेउपज्योनैगेव
फैलेनुपठाई॥चलीहरीवेगऊलाई
रागकीदारा॥कालौकहियेव्रजकीवा
ने हेनतस्यामतमविनउन्हलोकन
निशदिनजठरजराते॥परमदीनव
हेशिशिरहेमऋतुजेंपंकजविन
पातें॥दुपवलहरणसकलउन्हके
सैनाहीतेचितें॥जाकान्हकोआवत
देषतमिलपूछतऊशलातें॥श्रीः

बलनमदेनचपलग्रतिग्रानन्दरफिर
बरननलपटानै॥पच्छाछविनर
हृतनपावनथोथमंगसोसीचे॥मौ
पटमाकरछजनछातनहुराछ
विछाजतकेसरकीचे॥देषिचकीभ
जीवीजीनहैापरेपाछेगुपालगुला
लडलीचे॥पकहीसेगरपटेहहैस
खीवेभपडपरहींभईनीचे॥ध॥कवि-
न॥आलीहौगईहीकहूंभूलवरसाने
आजनापेतूपरेहेपदमाकरनने।
जीकें॥ब्रजवननावेवनतानमेर
वेहैं॥फागजिनमेजडथमनरावा
मगनेनीजैयैं॥बोरउरीकेसरसबे
सरविलोलउरीबोरउरीहूनरब्र
वानरंगरेनीजौं॥मोहिफकफोर
उरीकेत्रकीमेरोरउरीछोरडेरीक

मनविथोरडारीवेनीजोंं ॥५॥ कवित
आलीललितादलेकेवालीवृषभान
सुताफागकीहालीलालीयौवनसा
कीसव ॥ तासवादलेनकेफलाके
फलाफलकनचंदकीकलाकीचं
चलाकीछवताकीनव ॥ उआलकवि
आईनंदगामकीडगरपरजगरमगं
रजोतजागीहैमजाकीनव ॥ फलकौ
वकैपाआगेमिलगयोछवीलोछै
लगैलरोककाडेभयोसैलहिआं
कीअव ॥ ६ ॥ फागमैंभीरअहीरनकी
गहिगोविंदभीनरलेगईगोरीभा
ईकरीमनकीपदमाकउपरनाइ
अबीरकीफेरी ॥ छीनावतंवरक
मरतैंसुखेभीउकपोलविदारईरी
नैननवाइकसोमुसकाइललाफि

रविलनआइओहोरी ॥ रागगूजरी ॥
ऊंजभवनतेनिकसभोरहीसामा
सामघरे ॥ जलदवीचनरुनिदामि
निमिलिवरषिनिसाउचरे ॥ गोरसाम
तननीलपीतपटआलसवितहिय
रे ॥ श्रमजलकृदकहूकहूउदुगनवा
दरमेनिकरे ॥ भूषणविविधरूनेछ
दवारेअतरमउमगिउरे ॥ काजरअध
रतवोरनेनरंगअंगअंगकीलभेरे ॥
प्रेमघवाहकुटीमनोमरनाहटीमा
लगरे ॥ सोभाअमितविलोकसराष
भनाहीजातटरे ॥ रागमलार ॥ आज
तऊंजनमेदोऊआवत ॥ ओंओंवूद
परतचूनरपरसोंसोंहरिउरलाव
त ॥ नैसमोरकोकिलाबोलतपवन
वीजचनुधावत ॥ नैमुरलीकरमंद

बोरस्वरागमलारवतावत॥स्र
थिकजैकारजवहिमेघनकोउ
मतरछिनविरमावत॥वैहंसिग्रो
टकरतपीतांवरपहुनरीउछाव
त॥भीजेरागरागनीदोउभीजेज
लछविपावत॥तैसेमोरकोकिला
बोलतपवनबीजघनघावत॥तै
सरलीकरमंदघोरस्वरागमला
रखतावत॥स्रथिकफकोरजवहि
मेघनकोउमतरछिनविरमाव
त॥वैहंसिग्रोटकरतपीतांवरपहु
नरीउछावत भीजेरागरागनीदोउभी
जेजलछविपावत॥सूरदासप्रभुग्राफ
परसपरग्रीनभ्रथिकउपजावत॥रा
मेंघछिनमेतासोनायकवनयारेको
उसंगलादफिरतहेरतनाटकआभारी
कऊसेभरतकऊवेचतलेतनफाउऊ

हूनाभरणीनोलरै॥नूकहूदेसनमा
मोहसे मेएछुनहोनासोनायकव
नयारै॥राग॥लालयोकौनतियावेरमा
ये॥तिहारीबालछुटपटीलागनरस
वांयेभोरईश्राये॥मोसोंहूरावकरन
नेंदनेंदनप्रगटेविनहूंमेपाये॥सूर
दासप्रभुभागसखी जिनमिललाउ
लडाई॥लालहोकौनतिहावरमाये
राग॥गोपीसभेलीनीवेरएकहूनश्रा
ईफेर जाहूपाईकीनीजेरजैसेमीन
जालकीमंकनोश्रनेकमानै॥जेवहू
कीजातजानै॥तेवहूंकासारख्यानैवि
दिश्राविनालकी॥रागनोश्रनेकगा
वेतालमूलभेदपावै॥सोंतहोसवामि
लावेवेलारागमालकी॥वेदचारकें
ठगानै॥श्रठारापुराणजानैवेदाहू

विदिग्रालिंथानैपिंगलविग्रालकी
देवनकौटौनालावै।चडकेविवाए
थावै॥फूलकीफ़हारपावैनारीलाक
पालकौ।रागनीसिउठरलीनीगोपी
सभेरगभीनी॥रागदासदासीकीनी
मदनगोपालकीग्रसावरीहैतोहू
छिपिरग्राईसिंगारोईविंद्रावनकेहैं
हिग्राये॥माईपियारेनंदनंदनाग्रनत
हीरहेजाइकोनोयोराखछपाईमोकें
नछुसुहाईकरैकामकेदना॥मोहेते
पतीरीछूकग्रंतरभईहेयानेतमेसो
कहिनवातमेहीकियोदेदना॥सूरदा
सप्रभुविनभईहोंविकलग्रालीकहा
रेदेवनमालीसरनरमुनिवंदना॥राग
विलावल।करतनतसोभिनवानथैनेया
थलतफिरतकनकमयग्रांगनपहिंरेलाल

पनेहियां॥दसरथकौसल्याकेआंगे
लसनसुमनकीछैयां॥मानोचारहं
ससरवरमैवैठेआइसिदहियां॥रघु
कमुदचंदछविनामनिप्रगटेभूतल
महियां॥यहदीनआपरघुकुलकों
आनंदनिधिसवगाहियां॥३॥रागवि
लावल॥पनुहींवानलियेंकरडोलत
वारेंवीरसंगइकसोभितवचनमनो
हरवोहरवोलतलछमनभरतश
त्रुघनसुंदरराजीवलोचनराम॥अ
नसुकुमारपरमसुकहधारथसुकु
यमैयनयाम॥कटतकटपीतपि
छोरीवांधेकांकपछसिसीस॥सन
कोउदिनदिषनआवतेनारदसनते
नीस॥सिवमनसोचइंमनआनंद
ह्यावडःवव्रलसमान॥दिनडरंवल

रा
मे
१५

15

आनंदित नर्ह्रष वितदेहसुरमे थाते ॥ १४
रागमें रंग ॥ १ ॥ वंदौ चरणसरोज ति
हारे ॥ सुंदर अरुण कमल पल्लवसे
दशघट चिन्ह चारुमन हारे ॥ जेपद
पद्म सदाशिव के धन सिंधुसुता में
नन उरधारे ॥ जे पदपदम परस ऋषि
पतनी पापशिला छिन माहि उधारे ॥
जेपद परम परस जलपावन सुर
सरि दरसकटत ॥ अघभारे ॥ जो
पद पदम रमत ॥ विंदरावन अ
हि शिरधर अगनित रिपुमा
रे ॥ जोपदपदम परस ब्रजभा
मिनी ॥ तनमन दई सुनन सद
नविसारे ॥ जेपदपदम तातन
रिपुत्रासत करिक रुणापह
लादउवारे ॥ ॥

जेपदपदमगमनकौरवगृहहन
भयेसबकाजसवारे॥सोपदपदम
सूरसुखकारी॥त्रिविधताप दुःख
हरनहमारे॥वेदोचरनसरोजनि
हारे॥रागधनासिरी॥८८॥अबमैना
च्योबहुतगुपालसब्ध्याई॥कामक्रो
धकोपहिरचोलनाकंठविषयकी
माल॥महामोहकीनूपुरबाजतनि
दाशब्दरसाल॥भरमभरेमनभयो
पखावजचलतकुसंगतचाल॥तृष्णा
नादकरतघटभीतरनानाविधिदे
ताल॥मायाकोसिरफेंटाबांध्योलोभ
तिलकदीयोभाल॥कोटिककलाका
छिदिखराई॥जलथलसुधिनहिंका
ल॥सूरदासकीसबैअविद्यादूरकरो
नंदलाल॥हरीकोउकमनकाहन

रा
मं
१५

15

वरजेसुनमेराहिअालरजेअन
हिचपलसंदरगरलागोहिरहत
मेगनजननपलछिन॥छनवलक
रतनउरनकाहूमैंकेसेंकरजलभर
ये॥रागकानूडा॥अजुध्यावाजतआज
वधाई॥गर्भमुच्योसल्यामातारामचंद्र
निधिआई॥गावैसखीपरसपरमंगल
निछिअविषेककराई॥भीरभईदसर
थकेआंगनसामवेदधुनिगाई॥छ
छिनरिषिहिअजोध्याकोपतिहिक
हियेजनमगुसांई॥बुधवारनोमीति
थनीकीचौदहभुवनवधाई॥चावछ
वदसरथकेउपजेतिहूंलीकरवजु
राई॥सदासर्वदाराजराकोसूरदा
सनहेपाई॥रागकानूडा॥रघुऊ
लघगटहैरघुवीर॥ ⁘ ⁘

देसदेसतेटीकाआयेरतनकनक
मनिहीर॥घरघरमंगलहोतवधाई
अतिपुरवासिनभीर॥आनंदमगनभ
येसवडोलतनकछुनसोदसरीर॥मा
गधवंदीसूतलुटायेगायगायंदह
यहीर॥देतअसीससूरचिरजीवोराम
चंदरनवीर॥२६॥रागसारंग॥आजव
कभलीवातसुनआई॥महरिजसो-
दावालकजायोआंगनवजतवधाई
कहियेकहाकहतनहिंआवैरतम
भूमसचहुआई॥नाचतनहडतरुएअ
रुवालकगोरगोपग्वालनकीवभवा
ई॥वोरेभीरमोपग्वालनकीवरनोक
होवनाई॥सूरदासप्रभुअंतरजामी
नंदसुवनसुखदाई॥२७॥रागधनासि
री॥आजनंददकेद्वारेभीर॥इकआवतइ

रा
मे
१८

16

कन्मातबिलोहै॥इकठौढैंमेदकैतीर
कोउकेसरकोतिलकवनावतकोउ
पहरतकेतुकीचीर॥एकनकोंगोद
नसमर्पतएकनकोंपहरावतहीर॥
एकनकोंतुलसीकीमालाएकनकों
देखतधीर॥सूरदासघनस्यामसने
ही धनजसोदाशुएपशरीर॥२॥रागक
ली॥सखीहोंअबवेचाहसोंआई॥ऐसेदि
ननंदकेसुनियतउपजोंकुंवरक
न्हाई॥बाजतब्रजनिसानसबिकी
बिनिधिकोंफगुवजसहनाई॥महरि
महरदोउन्हाथ्यलटावतिआनंदउर
नसमाई॥चलोसखीहमहूंमिलिजैए
नेककरीआनबाई॥कोउ पहिरेकोउ
पहरतकोउऐसीहीउठिधाई॥के
चनध्यारहव ∴ ∴ ∴

दधिरोचनगोवनिचलीवधाई॥भांति
भांतिवनचलीजुघतिजनउपमावर
नीनजाई॥अमरविमानचढ़ेसघदेष
तजयघुनसवदसनाई॥सूरदासप्र
भुभक्तहेतवहिनंदछनकेउघदाई
रागविलावल॥व्रजघरनंदमहरकेव
याई॥प्रातसमैमोहनमुषनिरषतको
टिचंदछविछाई॥मिलव्रजनागरिमं
गलगावतनंदभवनमेंआई॥देतअसी
सजियोजसुयासुतकोटिकवरषक
न्हाई॥अतिआनंदवढ्यौगोकुलमेउप
माकहीनजाई॥सूरदासधनिनंदकी
घरनीदेषतनैनसिराई॥रागकान्हरा
नंदराइकेनवनिधिआई॥माथेमुकु
टश्रवणमणिकुंडलपीतवसनभु
जचारभुजाई॥वाजतवेनमदंगचत

रगजियसैअरगजाअंगवडाई॥अछत
हूवलियेंरिषठाडेवारनिवेथनवारे
पाई॥सूरदाससवमिलतपरसपरदान
देतनहीनंदअघाई॥रागमारू॥मेपर
देसनननाअकेली॥विनरघुनाथऔर
नहीकोउमातापितानसहेली॥रावन
भेषधर्योतपसीकोकतमैभिछ्याम
ली॥अतिअज्ञानमूढमतिमेरीरामरे
षपायनमेपेली॥विरहतापतनअ
धिकरावतजैसेंदोउमवेली॥सूर
दासप्रभुवगमिलावोप्रानजाहिंषे
षेली॥भैरवी॥मनउठप्रातभजन
करतजसभकाम ऊजवसनऊदद
सनकेंसहूतनकालीदमनराधा
वल्लभराधारमनगोविंदगुनग्रा
म॥ :: ॥ :: ॥ :: ॥ ::

गोपीनाथजगनाथजगजीवनजा
हीरायश्रीगुपालगिरवरधरश्रीप
तश्रीराम॥माधवमधुसूदनमद
मोचनमोहनमुकंदकरुणानिध
कमलापतकमलनैनस्याम॥वारह
मनचारवसनचारवरनचारचरण
चिंतामणिचमकचारचारचोरनाम
नरहरनरवरनरेसनिस्तनूतनाग
यणहेदारकहेदेवदीनसषथाम॥
ओंबालकांडश्रीरामचरितवरनने
रागकानूंअ॥आजदसरथकेआगन
भीर॥भुवकेभारउतारनकारनप्र
गटेस्यामशरीरफूलेफिरतअजो
ध्यावासीगनतनसागनवीर॥परि
रेभनहूसिदेनपरमपरआनंदने
ननिनीर॥त्रिदसिलूपनिरिखिवो

मविमाननिदेषतरहेनथीर॥त्रिभु
वननाथदयालदरसैदेहूरीसरति
कैपीर॥देनदानराषोनभूपकछु
महावडेनगाहीर॥भईनिहालस
रसूवजाचकजेनाचेरत्रवीर॥२१॥रा
गविलावल॥गाइयेगणपतिजगवं
दन॥शंकरसुवनभवानीनंदन॥सि
द्धिसदनगजवदनविनायक॥कृप
सिंधुसुंदरवरलायक॥मोदकप्रि
यसुदमंगलदाता॥विद्यावारिधिबु
द्धिविधाता॥मागततुलसीदासकरजो
री॥वसहुरामसियमानसमोरे॥१॥कोजा
चियेसंभुतजिआनदीनदयालभक्त
आरतहरससवप्रकारसमरथभ-
गवाना॥कादकूटज्वरजरतसुरासुर
निजपनलागिकियोविषपाना॥-

दाफनदनुजजगनडुषदायक॥ज
घोत्रिपुरएकहीबाना॥जोगतिअग
ममहासुनिउर्लभकहतसंत॥सु
निसकलडरामा॥सेवगतिमरनका
लअपनेउर॥देतसदाशिवसवहि
समाना॥सेवजसुलभउदारकल्प
तरूपारवतीपतिपरमसुजाना॥दे
हरामपदनेहअहकामरिपु॥तल
सीदासकहहुकृपानिधाना॥४॥रागमा
रुगजयजयजगजननिदेवि॥सुरन
रमुनिअसुरसेविभुक्तिमुक्तिदाय
निभयहरनिकालिका॥मंगलमुद
सिद्धिसदनिपर्वसर्वरीसवदनिता
पतिमिरलरूनतरनिकिरनिमा
लिका॥भूजनापिशाचप्रेतडाकिनी
शाकिनीसमेतभूतग्रहवेतालष

रा मं १९

19

लसगालिनालिकाजयमहेसभामि
नी॥ अनेकरूपनामिनिसमस्तलोक
स्वामिनी हि मिसिलवालिका॥ रघुपति
पदप्रेमबलसी॥ वरू अचलनेमदहि
केप्रसनपाहिप्रणतपालिका॥ जय
भगीरथनंदिनिमुनिचयचकोरचंदि
निनरनागविबुधवंदिनिजयजह्नुबा
लिका॥ विष्णुपदसरोजजासिईससी
शपरविभासिसरपथगासिपुण्यपा
पापदशालिका॥ विमलविपुलवहसि
वारिसीतलत्रयतापहारि॥ भवरभर
विभंगतरतरंगनालिका॥ पुरज
नपूजोपहारसोभितससिधवल
हारभंजनिभुवभारभक्तिकल्प
थ्यालिका॥ निजतटबासी बि
हंगजलथल ॥

चरपशुपतंगकीजटिलतापसस
बसरिसपाजिका॥तुलसीतवनीर
नीरसमिरतरघुवसवीरविचरत
मनिदेहिमोहमहिषकालिका॥रा
गपनासिरी॥जयतिअंजनीगर्भअं
भोधिसंभूतविधुविबुधकुलकैरवा
नंदकारी॥केसरीचारुलोचनचका
रकसुषदलोकगनशोकसंतापहा
री॥जयतिबालकपिकेलिकौतुकउ
दितजानितिफलचंडकरमंडलग्रा
सकर्ताराहुरविसक्रपविगर्वषर्वी
करनसरनभयहरनजयभुवन
भर्ता॥जयतिधर्मधुरधीरवरवीर
रघुवीरहितभद्रअवतारसंसार
पाताविप्रसुरसिद्धमुनिआसिषा
करवपुष॥विमलगुणबुद्धिवारि

रा मे ५
20

विधाता॥ ५॥ राग वसंत॥ वंदौ रघुपति
करुनानिधान॥ जाते छूटै भवभेद
ज्ञान॥ रघुवंस कमुद सुखप्रद निशे
ष सेवित पदपंकज॥ अज महेस नि
ज भक्ति हृदय पाथोज भृंग॥ लावण्य
वपुष अगनित अनंग अति प्रबल
मोह तम मारतंड॥ अज्ञान गहन पाव
क प्रचंड अभिमान सिंधु कुंभज उदार
सुररंजन भंजन भूमिभार राग आदि स
र्पगन पन्नगारी॥ कंदर्प नाग मृग प
ति मुरारि भव जलधि पोत चरनार
विंद॥ जानकीरवन आनंद कुंद हंस
मंत्र प्रेम मानस मराल निःकाम का
मधुक गोदपाल॥ त्रैलोक तिलक
गुनगहन राम॥ कह तुलसीदास
विश्रामधाम॥ ५॥ राग भैरव॥ ॥:॥

रामजपुरामजपुरामजपुबावरे
घोरभवरिधिसिडिणिथिरे॥भला
जोहैयोचुनोहैदाहिनोजोवामरे
रामनामहीसोअंतसवहीसोंका
मरे॥जगनभवाटिकारहीफलिकू
लेरे॥धुवासोधौरहरदेखतूनभूलि
रे॥रामनामछाडिजोभरोसोकरे
औररे॥तुलसीपरिसोत्यागिमांगेकू
रकौररे॥१॥रामनामजपजीयेसदा
सानुरागरे॥कलिनविरागजोगज
पतपत्यागरे॥रामनामसुमिरन
सवविधिहीकोराजरे॥रामकोवि
सारिवोनिषेदसिरताजरे॥रामना
ममहामनिफनिजगजालरे॥मनि
लियेफनिजियेव्याकुलविहालरे॥रा
मनामकामतरुदेतफलचारारा

कहतपुरानवेदपंडितपुरारिरे॥
रामनामकामतरुदेतफलचारेरे
कहतपराप्रेमपरमारथकोसारु
रे॥रामनामतुलसीकोजीवनअधा
ररे॥ ॥सुनिमनमूढसिषापनमेरो।
हरिपदविमुषकेंनलह्योसुषस
ठयहसमुझिसहरिपदविमुषकें
नलह्योवेरो।विछुरेशशिरविमननै
नतेपावततुषवहुतेरो।भ्रमतश्रमि
तनिसिदिवसगगनमहतहरिपु
राहुवडेरो।जदपिअतिपुनीतसुरस
रितातिहुपुरसुजसघनेरो॥तजेचर
नअजहुनमिटतनितवहिवोताहु
केरो।छुटेनविपतिभजेविनरघुप
तिसियातननिवेरो॥तुलसीदसमव
आसछोडिकेहोहुरामपदचेरो॥५॥

ईसकेसीसमुनिवेदचहूं॥श्रीरघुवीर
चरनचिंतनतजिनाहिनठौरकहूं
जाकेचरनविरंचिसेयिपाईसकर
हूं॥सकसनकादिमुक्तविचरतजसो
भजननपाईसकरहूं॥सकसनकामु
क्तविचरत॥जदपिपरमचपलश्रीसं
ततथिरनरहहूतिकलहूं॥जदपिप
रमचपलहरिपदपंकजपादस्रव
लमइकमेवचमनहूं॥करुनासिं
धुभक्तचिंतामणिसोभासेवनहूं
औरसकलसुरअसुरईससबसखा
ईहरगछहूं॥स्वरुविकसोसेसम
नाप्रतिपरुषावचनजवहूं॥तलसी
दाससरघुनाथविमुखनहीमिटैवि
पतिकतहूं॥रागजैतश्री॥कछुहूं
नआईगयोजनमुनायश्रतिडलेभ

तनुपाईकपटतजिभजेनराममनव
चनकायलरिकाईबीतीअचेतचित
चंचलताचौगुनेचायजोवनजुरजुव
तीकुपथ्यकरिभयोत्रिदोशभरम
दनवाय॥मध्यवयसधनुहेतगवा
योकृषीवनिजनानाउपाईरामविमु
षसुषलह्योनसपनेहु॥निसिवासर
तयोतिहुतापसेयेनहीसीतापति
सेवकसाधुमतिभलेभगतिभाईसु
नेनपुलकितनुकहेनमुदितमनकि
येजेचरितरघुवंशरायअवसोवतम
निविनुअवेगजैसौनिकलअंगदलेज
राजायसि॥रधुनिधुनिपछितातमी
जिकरकोउनमीतहित॥दुसहदायजि
नलगिनिजपरलोकविगारेतजा
नेहीनठठगायेतुलसी॥अजहुसुमि

तिरत्रनाथहितयोगगयौजुजाकेए
कनायका॥८८॥मेरोमनहरिहठन
तैजैनिसिदिननाथदेउसिषबहु
विधिकरतसुभाउनिजै॥ज्योजुवती
अनुभवतिप्रसभअतिदारुनदुष
उपजैहूअनकलविसारिसूलस
ठपुनिषलपतिहिभजै॥लोलपभ्र
मतफिरतग्रहपसुज्यौंजहंतहं॥
सिरपदत्रानभजै॥तदपिअधमवि
चरततिहिमारगकबहूनमूढ़ल
जै॥हौहार्योकरिजतनविविधिवि
धिअतिसैप्रबलअजै॥तुलसीदास
बसहोतजवैतबप्रेरकप्रभुबरजै
॥८९॥फेलाफिलचोरनचोरनकोमू
वज्ञाणकीपेलापेलरेलारेलेरंगपे
अगमनरसतहै॥केहूपदमाकरवा
लेपनकीलागीपदहलपावैमेकक

कुकफागदईसतहै॥ यामथकोय
कोवैनीवनकोलागे अवउथम
अनोषोआजदरसतहै॥ गुआल
परगुआलनहै॥वालषरखजवाल
उहै॥ नेदपरगुलालपेसेवरसत
है॥ जियासुषकवहूंनपावैअसक
छुसस्वरूपरनरघुरायाविनतव
कृपादया॥ लदासहितमोहनछु
टमाया॥ वाकातानअसंतनिधन
भवपारनपावैकोई॥ तिसिग्रहम
पदोपकीवातिमतमनिवर्नेनहै
है जेसेकोउइककहोन॥ उषितअति
असनहोतउषपावैविष्ठकलप
नकुकामेथनुग्रहलिषन॥ विपति
नसावैषटरसवकुप्रकारभोजन
कोदिनअकेनवषानेविनवो
लैसेतोषजनितसुषषाईसोई

नेजानैजवलगिनहिनिजहृदयप्रका
सैगुरुविषैआससममहीं।तुलसीतव
लगिजगतजोनिभ्रमसपनेऊसभग
तिनाहीं॥२४॥रागप्रभाती॥रामचंद्ररघु
नायकतुमसोंहौं॥विनतीकेहिभांति
करौं।अघअनेकअवलोकिआपनेअन
घनामअनुमानीडरौं।परदुखदुखीसु
खीपरसुखतेंसंतसीलनहिहृदयधरौं
देखिआनकीविपतिपरमसुखसुनि
संपतिविनुआगिजरौं॥भक्तिविरागजा
नसाधनकहिवहुविधिडहकतलो
गफिरौं॥शिवसरवससुखधामनाम
तुववेंचिनरकप्रदउदरभरौंजान
तहौंनिजपापजलधिजिय॥जलसी
करसमसुनतलरौंरजसमपर।अव
गुनसुमेरुकरिगुनगिरिसमरजते

निदरौ॥नामावेषबनाइदिवसनिशि
परबितनतेहितेहिजगतिहरौ॥एको
पलनकबहूआलोलचितहितदैपद
सरोजसुमिरौजोआचरनविचारहुमे
रौकलपकोटिलगिअवटिमरौतुलसी
दासप्रभुकृपाविलोकनिगोपदज्यौ
भवसिंधुतरौ॥२॥मनहुरामरघुवीरते
सोईमननअनीलरतनमेरो॥चरनसरोज
विसारितिहारेनिसिदिनफिरतअने
रौ॥मानतनहीनिगमअनुसासनत्रा
सनकहूकेरो॥भूलीशूलकरमकरे
ऊनतिलज्योंवहूवारनीघेरो॥नहम
नसंगाकथामायबकीमधनेहूकर
तनफेरौ॥लोभमोहमदकामक्रो
धरननिनसोंप्रेमघनेरो॥परगु
णसुननतदाहूपरहषण ॥९॥

सुनतहर्षबहुतेरों॥आपपाकेनगर
निसावनसहिनसकतपरषेरो॥सा
धनफलस्रुतिसारनामतवभवसरि
ताकहँवेरो॥सोपरकरकाकीनहँला
गिसठवेचिहोतिहठिचेरों॥कबहूंकहौं
संगतिप्रभावतेजाउसमारगनेरो॥त
वकरिक्रोधसंगकुमनोरथदेतम
हाभटभेरो॥यकहौंदीनमलीनहीन
मतिविपतिजालअतिघेरो॥तापरस
हिनजाइकरुनानिधिमनकोदुस
हदरेरो॥हारिपर्योकरिजतनबहुत
विधितातेंकहतसवेरों॥तुलसी
दासयहत्रासमिटैजबकरहुहृदय
तुमडेरो॥१॥तजीयेताहिकोटिवेरी
समजद्यपिपरमसनेही॥जिनकेप्रि-
यनरामवैदेही॥पितातज्योप्रल्हाद

भवीभनवंभूभरतममहारी॥वसि
गुरुतजेनाहूव्रजवनितनिभयेजग
मंगलकारी॥नातोनेहरामसोंसांचो
सजनसुहृदयजहांलों॥अंजनकहा
आंषजोफूटैबहुतककहीयेकहांलों
सोइसजनसोइहितूहमारोप्राण
पतेप्यारोजितेसंगवटनसनेहू
रीमसोंतुलसीमतोहमारोंजिनु-
हूत्रेअपनरामवैदेही॥२४॥इतिश्री
विनयपत्रकागीतावलीपदसमा
प्तश्रीरामजीसदासहाइ॥१॥जानकी-
जीवनकीवलिजैहै॥चितकहैरामसि
यापदपरिहरि॥श्रवनकहूंचलिजैहै
उपजीउरपरतीतिसपनेहूंसुख॥प्र
भुपदविमुखनपैहै॥मनसमेत
यातनकेवासिनइ ः

हूसिषावनदैहौ॥श्रवननयोरकथा
नहिसुनिहौरसनाश्रौरनगैहौरोकि
हौनैनविलोकितश्रौरहिसीसईस
हीनैहौ॥नातैनेहनाथसोकरिसव
नातैनेहवहैहौ॥हेछरुभारताहि
तुलसीजगजाकोदासकहैहौ॥२४॥
अवलौनासानीअवननसैहौरामकृ
पायाभवनिसासिरानीजागेपाफिरि
नडसैहौ॥पायोनामचारुचितामणि
उरकरश्रवनखसैहौ॥स्यामरूपसु
चिरुचिरकसौटीचितकंचनहिक
सैहौ॥परवसजानिहस्योइनइंद्रि
ननिजवसहोइनहसैहौ॥मनमधु
पकहिप्रवकैतुलसीरघुपतिपदक
मलवसैहौ॥२५॥केशवकहिनजाइ
काकहियदेखतमवरचनाविचित्र

हीसगुकिमनहिमनरहियेसूस
भीतिपरविचरंगनहितनविनुलि
घाचितैरं॥घोइमिटयनमरइभीति
उषपाइयेंहितनुहैरं॥रविकरनीरव
सेश्रतिदारुनमकररूपतहिनाही
वदनहीनतेहिग्रसेचराचरपानक
रनेजेजाही॥कोकहसमउठकहीक
रुजेगलप्रवलकरिविनुरघुपति
सकैकोटारी॥वरुउपायसंसारतर
नकहविमलगिरागुनिगावे॥वल
सीदाससमेमोरगपैंविनु॥रागदेसर
श्रवकैराषलेऊगोपाल॥दसकैदिसे
दिसैंदेश्रागनउपजिहैं॥यहकाल
पटकतवोंसकांसविगाचटकनल
टकनताललमाल॥इतउतश्रंतश्र
गारफटतफललपटतकपटका

ल॥ धुरधुंदवाद्धि परषै वरचमक
नउर मु(विज्वाल॥ हूरनवराहमोर
सकसारकयहूजिवजरतवेहाल॥ म
नउरकरोनैनसवंसुदाहूसवालैं
दलाल॥ सुरस्रग्रसववदनसमाति
स्रभयकरैस्रजवाल॥ रामदेव॥ स्र
वकेराषलेहूभगवान॥ हूमषनाथ
वेठेडुमडुरिघ्रा पारपिंसायेवान॥
जाकेडरभाजेसावाहूतहोउपरफुको
सवान॥ उडूंमातिडविमयोग्रतिथ॥
हूकैौनउवारेंप्रान॥ सुमरतहिंघ॥
हूडसैंपारथिकरकुटेसंथान॥ सूर
दासमरलगेसवानेजियोजियोक
पातिथान॥ रागकानुडा॥ रघुजलध
गटेहूरघुवीर॥ देसदेसतेटीकोग्रा
योरतमकनकमनिहीर॥ घरघरमे

गलहोतनवधाईअतिअरवासिनभी
र॥आनंदमगनभयेसबओलनक
छुनसोधसरीरमोगायेवेदीसूनल
टाईगावगायेदयहीरदेतअसीस
सूरचिरजीवोरामचंद्रनथी॥राग
विलावल॥करतलसोभितवानधनै
यांखेलनफिरतकनकमयआगनैये
हिरैंलालपनैहींयां॥दसरथकोसल
केआगेलसतसुमनकीछैयां॥मानो
चारहंससरवरमेंवेठेआइसिदहि
यां॥रघुकुमदचंद्रचिताम्मणिप्रगटे
भूतलमेंयां॥यहेदीनआयेरघुकुल
मेंआनंदनिधिसभगाहियां॥पखव
तीनलोकेमनाहीसोपायप्रभुपहि
यां॥सूरदासप्रभुवोलभक्तकोनिर
वाहतदेवेदियां॥काफी ॥

मइयामोहिदाउवहुतखिजायो॥मोसों
कहतमोलकोलीयो॥तूजसुमतक
वजायो॥कहाकहौंजिहिरिसकेमारे
खिलनहौंनहिजान॥फुनिफुनिकह
तकोननतेरेमाताकोनहौंतेरोतात॥गो
रीनंदजसोदागोरीतुमकतस्यामश
रीर॥चुटकीदईदईगवालहसतहैं॥
सिखैदेतवलवीर॥तूमोहीकोमारन
सीखिदाउनेकनखीने॥मोहनमुख
रिसकीइवातेजननीमनमनरीजे
सुनोकान्हवलभद्रचवाईजन्महिते
यहधूत॥सूरस्याममेगोधनकोसोंमे
जननीतूपूत॥काफी॥मैइयामेरीखे
लनजाइवलइया॥जवहिमोहिदेषत
लरकनसंगतनवाखीफतमलभइया
मोसोकहतनजातवसुदेवदेवकीतेरी

मइया ॥ मूल लियो कछु दई कर तिन्ह
को करि कर जितन वढ़ाइ आ ॥ अव वावा
वावा कहि नंद सो जसमति सों कहि म
ईया ॥ ऐसे कहि सव मो हि षिका वतत
व उठ चलैया विसराई आ ॥ पाछे सन तभ
ये ठाढ़े हसत हसत उर लईयां सूर नं
द वलराम हिराखो तव मन हर्षव मे
इया ॥ काफी ॥ मोहन मान मनायो मेरो
मैं वलिहार नंदनंद की नेक चितै हसि
हेरो ॥ कारो कहि कहि तोहि खिजाव
त वरजत न खिरो अनेरो ॥ ईउ नील मणि
ते तन सुंदर कहा कहि वल चेरो ॥ न्या
रो जूथ हांके लै अपनी न्यारी गाइ निखे
री मेरो सुत सरदार सवन को वहु
ते कान्ह वडेरो ॥ वनमे जाइ करो
कौतूहल जह ॥ः

अथ मोह बिरो ॥ सूरदास सन्त्रो रे गावतै
बिमल बिमल जस तेरो ॥ राग धनाश्रि
री ॥ कहियो सखी वटाउ को है अद्भु
त वपु लिये संग आओ लत देखत त्रिभुव
न मोहे ॥ परम सुलच्छन सुशील जो
री विधि की रवीन हारी ॥ काकी याकी
उपमा दीजे देह धरे योकोई ॥ कहि मे
को पति तुम्हारो पुरजन पूछै याई ॥ रा
जीव नैन मन की मूरत सेन निमाइ
वताई ॥ गई सकल मिल संग हरलो
मन न फिर न घर वास ॥ सूरदास स्वा
मी के बिछुरे भरि लेत उसास ॥ कानूं अ
श्रे जो ध्यावाजन तें आनंदवधाई ॥ गरभमु
छो के सल्य माता श्री रामचंद्र निध
आई ॥ गावन सखी परस्पर मंगल रु
षिअभिषेक कराई ॥ भीरभई दसरथ

केसौंगानस्यामवेदपुनगाई॥पुछत
ऋषिअजोध्याकापतिकेहैंजन्मग
सोई॥बुधवारनौमितिथ्यनिकौचौदे
भवनमंडाई॥बारसतदसेरथकेउ
पजेतिंहलोकठकुराई॥सदासवदा
राजरामकोसूरदासपुनगाई॥खेल
तफागरसोरसभारी॥वृडिकिसोर
वालनरनारी॥अतिथमजानगोयज
लतीरा॥सूरस्यामहलधरहरवीरा॥
रागहोली॥मरमपुनीतजमुनजल
रासी॥क्रीडितजहोब्रह्मअविनासीय
न्यधन्यसवब्रजकेवासी॥विरहतसूर
स्यामकरिहांसी॥यहोली॥खेलतफा
गकननिकौतहलनेहभरिमनमथ-
जोरिकेवरनवरनसिरपागचौतनी
कटिलिलाटचंदनषोरके॥ १८

इत वृषभानसुता संग लीने उत कु
ननवल सब दिन थोरी के ॥ सूर
दास प्रभु निकै सैवरने छबि राधा
मोहनजोरी के ॥ ४ ॥ राग होली हो
हो हो हो हो री बाल ॥ गोरस के रेमा
नै मैले ॥ ब्रज के लोग संग लिये जो
ले घर घर के रे फर के षाले ॥ गोपी
ग्वाल मिले इकमारि ॥ वचन नहीं
दीने बिन गारी ॥ सूर स्याम दोउ मो
हन प्यारी ॥ हो री ॥ स्यामा स्याम दोउ
षेलन होरी ॥ फाग मच्यो अति ब्र
ज के षोरी ॥ अति ही बनी वृषभान
किसोरी ॥ नव सिंगार श्री राधे गोरी
उत हि स्याम हलधर दोउ जोरी ॥ बा
रे कोठ काम छबि थोरी ॥ ग्वाल
अंटीरन कीले फोरी ॥ सूर गुलाल

रा
मे
३०

30

अरगजारोरी ॥ मलार ॥ यहरुतह
मरहुनकीनहीं ॥ वरषतमेघमेद
नीउरतरइतप्रीतमहरषवढा
ई ॥ नीसेनवासीनदीयोवहकर
सागरमैंमिलजाई ॥ जोवेलीअग
नकीदासीतेतरवरलपटाई ॥ ये
कोनकहानेआये ॥ नीलपीतपाये
जवरणमनहरणसभायसहाये ॥
मुनिसुतकियोअपकवरकियोव
लजीवजगजाये ॥ नृपजलधिकेर
वसछविनिपलोचनललितलला
ये ॥ कियोरविसुवनमदजरत्तपतिकि
योहरिहरभेषवनाये ॥ कियोआप
नेसकलघरनकेसकलरावरेहि
पाये ॥ भयेविदेहविदेहनेदवशादे
हदशाविसराये ॥ पुलकगातनस

मानहुराषेउहियसलिलसलोचनछाये
जनकवचनसुनिमगनमधुरभेरभक्ति
कौशिककहिभाये॥ तुलसीप्रीतिआनंद
उनटउमंगिउरराम लषणगुणगाये
गणधनामोरी॥ सनकहोमरोसहजुस
भाउ॥ सनहूसषाकोपिपातिलंकापति
तुमसेकोनउराउ॥ सवविधिहीनदी
नअतिजउमतिजाकोकनइनदाउ॥
आयेपारनभजोननजोनुहियहजा
ननअरिषिराउ॥ तिनकोहादिनसवअ
कारविननाहिनऔरउपाउ॥ तिनहि
लागिधरिदेहकरोंसवडरोनसयश
नपाउ॥ पुनिपुनिभुजाउठाइकहि
नेहीसकलसभावतिआउ॥ नपिहन
कोउप्रियमोहिदाससमकपटप्री
तिवहिजाउ॥ सुनिरघुपतिकेवचन

रा॰ मं॰ ३१

31

विभीषनप्रेममगनमनचाउ॥तुलसि
दासतजिआशत्राशसबऐसेप्रभुक॰
हंगाउ॥इतिश्रीरागमंजरीसंपूर्णम
शुभम॥श्रीरामजी॥